आफन्ती के किस्से



पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस

प्रथम संस्करण : 1981

द्वितीय संस्करण : 1987

तृतीय संस्करण : सितम्बर, 2011

मूल्य : 40 रुपये

शमीम फ़ैज़ी द्वारा यूनाईटेड मीडिया, 18/3, आर्य समाज रोड, करोल बाग, नई दिल्ली - 5
में मुद्रित और उन्हीं के द्वारा पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लिमिटेड
5-ई, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली - 110 055 की ओर से प्रकाशित।

प्रकाशक की ओर से

लम्बी दाढ़ी और मोटे साफे वाला नसरूद्दीन आफन्ती चीन के शिनच्याङ प्रदेश के लोक-साहित्य का एक ऐसा पात्र है जो अपने दुबले-पतले गधे पर सवार होकर जगह-जगह घूमता फिरता है और अपनी अनोखी सूझबूझ, साहस, हाजिर जवाबी और विनोदशीलता से सबको चकित कर देता है।

"आफन्ती मूलतः तुर्की का निवासी था। उसका जीवन काल तेरहवीं शताब्दी के आसपास माना जाता है। तुर्की लोक साहित्य में वह नसरूद्दीन होजा के नाम से मशहूर है। पर अन्य देशों के साहित्य में उसके अलग-अलग नाम हैं, नसरूद्दीन आफन्ती, आन्ती, अतेंती, आपन्ती, रूमेलिया का जोहा, नसरूद्दीन आदि। "आफन्ती" दरअसल नसरूद्दीन की उपाधि है, जिसका अर्थ है "साहब"। ताजिक जाति के लोगों का विश्वास है कि आफन्ती खोजन्त (वर्तमान लेनिनावाद) का निवासी था। उजबेक जाति के लोग यह मानते हैं कि आफन्ती ने बुखारा और समरकन्द नामक दो

प्रसिद्ध प्राचीन नगरों की यात्रा की थी। इसके प्रमाण के रूप में यह कहा जाता है कि उसके अनेक किस्सों में इन्हीं दो शहरों का उल्लेख किया गया है।

चीन के शिनच्याङ प्रदेश में उइगुर जाति के लोगों में आफन्ती का नाम बच्चे-बच्चे की जबान पर है। मालूम होता है कि उसके किस्से रेशम मार्ग से चीन आए थे। शिनच्याङ में बहुत से लोग अब भी यह मानते हैं कि आफन्ती उनके प्रदेश में स्वयं आया था और उनके पूर्वजों में मिल गया था। ये सब बातें कितनी तथ्यपूर्ण हैं यह कहना कठिन है। पर एक बात निश्चित है। आफन्ती के किस्से गत अनेक शताब्दियों में शिनच्याङ की मिट्टी में न सिर्फ गहरी जड़ें जमा चुके हैं बल्कि स्थानीय रंग में रंग कर पल्लवित-पुष्पित भी हो चुके हैं। परिणामतः आफन्ती आज उइगुर लोक-साहित्य का एक चमकदार सितारा बन गया है।

आफन्ती के किस्सों के अनुवाद वर्तमान शताब्दी में विश्व की अनेक भाषाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। चीनी भाषा में भी 1958 से अब तक उनके कम से कम छःसंस्करण निकल चुके हैं। इसके अलावा शाङहाए कार्टून-फिल्म स्टूडियो, पेइचिंग, फिल्म स्टूडियो द्वारा "आफन्ती" के नाम से क्रमशः एक कार्टून फिल्म और एक कथा-फिल्म भी बनाई जा चुकी है।

हास्य-व्यंग्य आफन्ती के किस्सों की मुख्य विशेषता है। उनमें एक तरफ तो चुभती शैली में सामन्ती शासकों के खूंखार

शोषण-उत्पीड़न पर तीखा प्रहार किया गया है, उनकी जहालत व बेइल्मी की खिल्ली उड़ाई गई है तथा उनके ढोंगीपन व पाखण्डीपन की बखिया उधेड़ी गई है, और दूसरी तरफ मेहनतकश लोगों की खुशहाली की आकांक्षा को, उनके प्रेम और उनकी घृणा को तथा सही और गलत के बारे में उनकी धारणाओं को प्रतिबिम्बित किया गया है। विषयवस्तु की दृष्टि से इन किस्सों को मोटे तौर पर दो श्रेणियों में बांटा जा सकता है-सामन्ती शासकों के खूंखार स्वरूप पर चोट करने वाले किस्से तथा मेहनतकश लोगों में मौजूद आलसीपन, खुदगर्जी, आत्मप्रशंसा व घमण्ड जैसी प्रवृत्तियों और अन्धविश्वासों की आलोचना करने वाले किस्से-जिनसे न सिर्फ पाठकों का मनोरंजन होता है बल्कि उन्हें शिक्षा व प्रेरणा भी प्राप्त होती है।

प्रस्तुत संकलन में नसरूद्दीन आफन्ती के चुने हुए किस्से शामिल किए गए हैं। उइगुर लोक-साहित्य के ये अनमोल मोती यदि हिन्दी पाठकों को रुचिकर प्रतीत हुए, तो हम अपना प्रयास सफल समझेंगे।

क्रम

बादशाह का जामा

एक बार बादशाह ने एक शानदार दावत दी। दावत में सभी अमीर-उमराव, हाकिम-हुक्मरान निमंत्रित थे। इस अवसर पर बादशाह ने आफन्ती को भी निमंत्रण दिया था। दावत के बाद बादशाह ने हर मेहमान को एक बढ़िया पोशाक भेंट की। लेकिन आफन्ती का अपमान करने के लिए उसे गधे की पीठ पर रखा जाने वाला सन का जामा थमा दिया। आफन्ती ने बड़े अदब के साथ बादशाह के हाथ से यह जामा ले लिया और अनेक बार झुककर शुक्रिया अदा किया। इसके बाद वह बुलन्द आवाज में बोला:

"माननीय मेहमानो, बादशाह सलामत ने आप लोगों को रेशम-साटन के कपड़े भेंट किए हैं। पर ये सब बाजार में मिल सकते हैं। जरा गौर फरमाइए, बादशाह सलामत मेरी कितनी इज्जत करते हैं! उन्होंने मुझे अपना खुद का जामा भेंट कर दिया है!"

एक टांग वाला कलहंस

एक बार आफन्ती को एक कलहंस मिला। वह उसे बादशाह को भेंट करने चल पड़ा। रास्ते में उसे भूख लगी। सड़क के किनारे बैठकर उसने कलहंस की एक टांग स्वयं खा ली।

महल में पहुंचकर उसने बाकी कलहंस को बड़े अदब के साथ बादशाह को भेंट कर दिया। बादशाह ने कलहंस को उलट-पलट कर गौर से देखने के बाद उससे पूछा:

"आफन्ती, तुम्हारे कलहंस की केवल एक ही टांग क्यों है?" आफन्ती ने यह नहीं सोचा था कि बादशाह भेंट की गई चीज को इतने गौर से देखेगा। कुछ समय तक उसे कोई उत्तर नहीं सूझा। संयोग से उसने देखा, महल के अहाते में सभी कलहंस अपनी एक टांग मोड़कर केवल एक टांग पर खड़े हैं। आफन्ती को बादशाह के सवाल का जवाब मिल गया। कलहंसों की ओर इशारा करता हुआ वह बोला:

"जहांपनाह, कुदरत ने कलहंस को केवल एक टांग दी है, दो नहीं। आप जरा अपने महल के अहाते में खड़े कलहंसों पर तो नजर डालिए।"

बादशाह ने कलहंसों को देखते ही अंगरक्षकों को हुक्म दिया कि वे डण्डे से उन्हें भगा दें। बेचारे कलहंस डण्डे की मार से बचने के लिए दोनों टांगों पर चलते हुए तितर-बितर हो गए। बादशाह ने चुटकी ली:

"आफन्ती, क्या इनमें एक भी कलहंस ऐसा है जिसकी सिर्फ

एक टांग हो?"

"आप सही फरमा रहे हैं, जहांपनाह!" आफन्ती ने तनिक भी विचलित हुए बिना उत्तर दिया। "कलहंसों की बात तो दूर रही, इतना बड़ा डण्डा उठाकर अगर कोई आपके पीछे दौड़ता, तो शायद आपकी दो टांगें भी चार टांगों में बदल जातीं और आप सिर पर पांव रखकर भाग खड़े होते!"

"सिर्फ अपनी मंजिल तोड़ रहा हूं!"

आफन्ती ने एक सेठ से सौ य्वानपाओ* उधार लिये और अपने परिवार के लोगों के साथ कठोर परिश्रम करके एक दुमंजिला मकान बनाया। मकान बहुत सुन्दर था। आफन्ती अभी नए मकान में गृहप्रवेश भी नहीं कर पाया था कि सेठ मकान की दूसरी मंजिल पर कब्जा करने के इरादे से उससे बोला: "अगर तुम अपने मकान की दूसरी मंजिल मुझे दे दो, तो तुम्हारा कर्जा उतर जाएगा। वरना मेरा सारा कर्जा तुम्हें अभी चुकाना होगा।"

"मुझे मंजूर है," यह कहकर आफन्ती ने सेठ की बात फौरन मान ली और उससे बोला "मैं सोच रहा था, तुम्हारा ऋण कैसे चुकाऊंगा। अच्छा हुआ, तुमने खुद ही उपाय सुझा दिया।"

---

* *जूते के आकार का सोने या चांदी का टुकड़ा, जिसे सामन्ती चीन में सिक्के के रूप में इस्तेमाल किया जाता था।*



सेठ का परिवार इतराता हुआ आफन्ती के नए मकान की दूसरी मंजिल पर रहने लगा। कुछ दिन बीतने के बाद आफन्ती ने अपने सात-आठ पड़ोसियों को बुलाया और उनसे गैंतियां उठाकर मकान की दीवार तोड़ने को कहा। गैंतियों की आवाज सुनकर सेठ ऊपर की मंजिल से बौखलाकर बोला:

"क्या तुम पागल हो गए हो, आफन्ती? नए मकान को क्यों तोड़ रहे हो?"

"तुम्हारा इससे क्या सरोकार? तुम इत्मीनान से दूसरी मंजिल में बैठे रहो!" दीवार पर गैंती से चोट करते हुए आफन्ती ने उत्तर दिया।

"क्या कहा? क्या इससे मेरा कोई सरोकार नहीं?" सेठ गुस्से से तमतमा उठा और गरजकर बोला, "हम लोग दूसरी मंजिल पर रहते हैं अगर मकान गिर गया, तो हमारा क्या होगा?"

"मैं क्या जानूं?" आफन्ती ने कहा। "मैं तो सिर्फ अपनी मंजिल तोड़ रहा हूं, तुम्हारी मंजिल नहीं। तुम अपनी मंजिल को अच्छी तरह सम्भाल कर रखो। कहीं वह गिर गई, तो हम लोग उसके नीचे दब जाएंगे!" यह कहकर उसने फिर गैंती उठा ली।

नरम होकर आफन्ती से सुलह-समझौता करने के सिवाय सेठ के सामने और कोई चारा नहीं रह गया। उसने कहा:

"प्यारे भाई, मैं तुमसे हाथ जोड़कर विनती करता हूं कि हमारी पुरानी दोस्ती को ध्यान में रखते हुए तुम अपने मकान की पहली मंजिल भी मुझे बेच दो। क्या तुम राजी हो?"

"ठीक है। तुम मुझे दो सौ य्वानपाओ और दे दो," आफन्ती ने उत्तर दिया।

सेठ अवाक रह गया।

"अगर एक भी य्वानपाओ कम मिला, तो मकान हर्गिज नहीं बेचूंगा और उसे तोड़कर ही रहूंगा।" आफन्ती ने गैंती फिर उठा ली।

"अच्छा बाबा, अच्छा। अगर यही बात है, तो मैं सारा मकान खरीद लूंगा।"

सेठ ने लाचार होकर सारा मकान खरीद लिया।

राक्षस

एक बार बाजार में एक ठेकेदार ने आफन्ती से पूछा:

"मैंने सुना है तुम अक्सर राक्षसों के सम्पर्क में रहते हो। क्या बता सकते हो कि राक्षस का चेहरा-मोहरा कैसा होता है?"

आफन्ती ने जवाब दिया:

"क्यों नहीं?आईने में अपनी सूरत देखते ही तुम्हें फौरन उसके चेहरे-मोहरे का पता चल जाएगा।"

कंजूस सेठ

एक सेठ बहुत कंजूस था। एक बार उसने आफन्ती को खाने पर बुलाया। सेठ ने अपना कटोरा तो दूध से ऊपर तक भर लिया और आफन्ती को आधे कटोरे से भी कम दूध देकर उससे बार-बार कहता रहा:

"लो भाई, यह दूध पी लो! तुम्हारी खातिरदारी के लिए मेरे पास कोई अच्छी चीज तो नहीं। कटोरा भर दूध जरूर पी लो।"

"सेठ जी, जरा एक आरी तो दीजिए," आफन्ती ने कहा।

सेठ आफन्ती की बात बिल्कुल नहीं समझ पाया और बोला "तुम्हें आरी क्यों चाहिए?"

"बात यह है," आफन्ती ने अपने सामने पड़े कटोरे की ओर इशारा करते हुए कहा, "इस कटोरे का ऊपर का हिस्सा बिल्कुल फालतू है। इसीलिए बेहतर यह होगा कि पहले मैं आरी से इस फालतू हिस्से को काट दूं!"

सच्ची बातें

एक बार बादशाह अपनी रिआया का हालचाल मालूम करने के इरादे से आफन्ती के घर गया। वह बोला:

"आफन्ती, जरा मुझे अपनी जमीन तो दिखाओ!"

"मेरी सारी जमीन होजा के कब्जे है," आफन्ती ने उत्तर दिया।

"तुम्हारा अनाज कहां है?"

"सारा अनाज आपके महल में पहुंचा चुका हूं।"

"तुम्हारे मकान की छत कहां है?"

"उसे साहूकार उठा ले गया है।"

"तुम्हारे घर का फर्नीचर कहां है?"

"उसे काजी उठा ले गया है।"

"तुम्हारा बेटा कहां है?"

"जिला अधिकारी के जुल्म की वजह से उसकी मृत्यु हो गई है।"

"और तुम्हारी पत्नी कहां है?"

"इस डर से कि उसे देखकर कहीं आप रीझ न जाएं, मैंने उसे छिपा दिया है।"

"तुम्हारी हर बात झूठी है, आफन्ती! आखिर तुम्हें मेरे सामने झूठ बोलने की जुर्रत कैसे हुई?" बादशाह ने गरजकर कहा।

"नहीं जहांपनाह, ये सब बातें सच्ची हैं!" आफन्ती ने उत्तर दिया। "अगर मैं झूठ बोलता, तो आप शायद इतने गुस्से में न आते!"

सच्चे दोस्त

जब आफन्ती काजी बन गया, तो उसके साथ दोस्ती बढ़ाने वालों में होड़ होने लगी। किसी ने उससे कहा:

"तुम कितने मजे में हो, आफन्ती! अब तुम्हारे इतने सारे दोस्त हो गए हैं।"

आफन्ती ने जवाब दिया:

"मेरे सच्चे दोस्त कितने हैं, इसका पता लगाना मुश्किल है। यह सिर्फ तभी पता चलेगा जब मैं काजी नहीं रहूंगा।"

बादशाह का सलाहकार

एक दिन किसी मंत्री ने बादशाह से आफन्ती की सिफारिश की और कहा:

"जहांपनाह, आफन्ती बहुत बड़ा आलिम-फाजिल हैं। वह न सिर्फ बहस-मुबाहिसा करने में माहिर है, बल्कि बेइन्तहां सूझबूझ वाला आदमी भी है। आप उसे अपना सलाहकार क्यों नहीं नियुक्त कर लेते?"

"ठीक है," बादशाह राजी हो गया। उसने आफन्ती को बुलाने के लिए फौरन आदमी भेज दिया।

"आफन्ती," बादशाह ने पूछा, "मैं चाहता हूं कि मेरी रिआया खुशहाल हो जाए। इसके लिए मुझे क्या-क्या उपाय करने चाहिए?"

"जहांपनाह, आप इसके लिए बहुत से उपाय कर सकते हैं। सवाल सिर्फ यह है कि आप उन्हें करना चाहते हैं या नहीं?" आफन्ती ने गम्भीरता से कहा। "अगर आप वह तमाम अनाज और पैसा, जिसे आपके हुक्म पर अवाम से वसूल किया जाता है, लोगों को वापस लौटा दें, तो क्या आपकी रिआया जल्दी ही खुशहाल नहीं हो जाएगी?"

भेड़िये से कम नहीं

एक जिला अधिकारी ने एक बकरी को भेड़िये के हमले से बचा लिया और उसे अपने घर ले गया। घर पहुंचते ही उसने बकरी को मारने के लिए गंड़ासा निकाल लिया। बकरी जोर से मिमियाने लगी। उसकी पुकार पड़ोस में आफन्ती ने सुन ली।

जब आफन्ती जिला अधिकारी के पास पहुंचा, तो वह बोला:

"इस बकरी को मैंने भेड़िये से अभी-अभी बचाया है।"

"लेकिन यह तुम्हें कोस क्यों रही है?"

"कहां कोस रही है?"

"क्यों नहीं कोस रही?कह रही है, तुम भी भेड़िये से कम नहीं हो!"

बकरी न खाने वाला भेड़िया

एक बुजुर्ग चरवाहे ने आफन्ती से पूछा:

"आफन्ती भाई, मैं अब तक न जाने कितनी भेड़-बकरियां पाल चुका हूं। पर मेरी न जाने कितनी भेड़-बकरियों को भेड़िये चटकर गए हैं। क्या इस दुनिया में कोई ऐसा भेड़िया भी है जो बकरी न खाता हो?"

"क्यों नहीं?जरूर है!" आफन्ती ने उत्तर दिया।

"वह कैसा भेड़िया है?"

"जो मर चुका हो!"

बादशाह की कीमत

एक दिन बादशाह और आफन्ती एक साथ स्नान कर रहे थे। बादशाह ने पूछा:

"आफन्ती, अगर मुझे बाजार में एक गुलाम के तौर पर बेचा जाए, तो क्या क़ीमत मिलेगी?"

"ज्यादा से ज्यादा दस य्वानपाओ!" आफन्ती ने उत्तर दिया।

बादशाह गुस्से से आगबबूला हो उठा। बौखलाकर बोला:

"तुम निहायत बेवकूफ आदमी हो। जान पड़ता है तुम्हारी अक्ल घास चरने गई हुई है। मेरे इस कढ़े हुए मफलर की कीमत भी दस य्वानपाओ से कम नहीं है!"

"ठीक है, मेरे अक्लमन्द बादशाह!" आफन्ती मफलर की

ओर इशारा करता हुआ बोला। "मैंने दस य्वानपाओ इसी मफलर की कीमत बताई है।"

दो की जगह चार पैर

एक बार आफन्ती की आंखों में तकलीफ हो गई और उसे हर चीज धुंधली नजर आने लगी। बादशाह ने उसकी खिल्ली उड़ाते हुए कहा:

"आफन्ती, सुना है, अब तुम्हें हर चीज के दो रूप नजर आने लगे हैं। अब तक तुम्हारे पास सिर्फ एक ही गधा था, लेकिन अब दो गधे हो गए होंगे। तुम सचमुच अमीर बन गए हो! हा-हा-हा..."

"आपने बिल्कुल सही फरमाया, जहांपनाह!" आफन्ती बोला, "अब मुझे आपके भी दो की जगह चार पैर नजर आने लगे हैं!"

धन और न्याय

एक दिन बादशाह ने आफन्ती से पूछा:

"आफन्ती, अगर तुम्हें धन और न्याय में से किसी एक चीज को चुनना पड़े, तो तुम किसे चुनोगे?"

"धन को चुनूंगा।"

"आखिर क्यों?" बादशाह बोला। "अगर तुम्हारी जगह मैं होता तो जरूर न्याय को चुनता, धन को नहीं। धन तो आसानी से प्राप्त हो सकता हैं, पर न्याय मुश्किल से मिलता है।"

"आदमी उसी चीज को पाने की इच्छा रखता है जहांपनाह जिसका उसके पास अभाव हो!" आफन्ती ने तुरंत उत्तर दिया।

उल्लू की बोली

आफन्ती अक्सर कहता रहता था कि वह पक्षियों की बोलियां समझ सकता है। यह बात बादशाह के कानों में पड़ी तो उसने आफन्ती को अपने साथ शिकार खेलने बुला लिया।

चलते-चलते वे एक ऐसी गुफा के सामने जा पहुंचे, जो बुरी तरह ढह चुकी थी। उसके खण्डहरों पर एक उल्लू बैठा हुआ था। उल्लू की आवाज सुनकर बादशाह ने पूछा: "आफन्ती! यह उल्लू क्या कह रहा है?"

"जहांपनाह, यह कह रहा है कि अगर आपने रिआया पर जुल्म ढाना बन्द न किया तो वह दिन दूर नहीं जब आपकी सल्तनत भी इस गुफा की ही तरह खण्डहर बन जाएगी।"

बहिश्त बनाम दोजख

एक दिन बादशाह और आफन्ती गपशप कर रहे थे। बादशाह ने पूछा:

"तुम क्या सोचते हो, आफन्ती? मरने के बाद मेरी रूह बहिश्त में जाएगी या दोजख में?"

"आपकी रूह जरूर दोजख में जाएगी। इसका मैं पहले से ही अनुमान लगा चुका हूं!" आफन्ती ने उत्तर दिया।

यह सुनकर बादशाह का मुंह क्रोध से तमतमा उठा और उसने आफन्ती को खूब फटकार लगाई।

"गुस्सा न कीजिए, हुजूर। पहले मेरी बात तो समझ लीजिए!" आफन्ती बोला। "चूंकि आपने बड़ी तादाद में उन लोगों की हत्या की है जिनकी रूह बहिश्त जाने लायक थी, इसलिए इस समय सारा बहिश्त उन लोगों से खचाखच भरा हुआ है और आपके लिए वहां कोई जगह नहीं रह गई है!"

सोने की खेती

आफन्ती ने किसी से सोने के कुछ टुकड़े उधार लिये और अपने गधे पर सवार होकर एक बालूतट पर जा पहुंचा। वहां वह बड़ी संजीदगी के साथ छलनी से सोने के टुकड़ों को छानने लगा। कुछ देर बाद बादशाह शिकार खेलता हुआ वहां से गुजरा। आफन्ती की यह हरकत उसे बड़ी अजीब लगी। उसने पूछा:

"आफन्ती, तुम यह क्या कर रहे हो?"

"जहांपनाह, मैं इस वक्त सोने की बुवाई में मशगूल हूं।"

यह सुनकर बादशाह को और भी ताज्जुब हुआ। वह बोला:

"मेरे दानिशमन्द आफन्ती, यह तो बताओ, सोना बोने से तुम्हें क्या फायदा होगा?"

"क्या आपको यह भी नहीं मालूम, जहांपनाह?" आफन्ती ने जवाब दिया, "आज सोना बो रहा हूं और शुक्रवार को इसकी फसल काट लूंगा। पहली फसल में मुझे कम से कम दस ल्याङ* सोना जरूर मिलेगा।"

यह सुनते ही बादशाह के मुंह से लार टपकने लगी। उसने सोचा, इस बढ़िया व्यापार में वह भी साझेदार क्यों न बन जाए? वह मुस्कराता हुआ आफन्ती से बोला:

"आफन्ती भाई, तुम इतना कम सोना बोकर अमीर कैसे बन सकते हो? अगर सोना ही बोना चाहते हो तो ज्यादा से ज्यादा बोओ। बीज के लिए सोना काफी न हो, तो मेरे महल से ले आओ। जितना चाहो, ला सकते हो। अब मैं तुम्हारा साझेदार बन गया हूं। फसल में से अस्सी फीसदी हिस्सा मुझे दे देना। बोलो, तैयार हो?"

"ठीक है जहांपनाह, मुझे आपकी शर्त मंजूर है!"

दूसरे दिन आफन्ती महल से दो चिन* सोना उठा लाया और एक हफ्ते बाद दस चिन सोना बादशाह को भेंट कर आया। सोने की चमचमाती सिल्लियां देखकर बादशाह का दिल बांसों उछलने लगा। उसने फौरन अफसरों को हुक्म दिया कि वे शाही भण्डार में मौजूद सारा सोना बोने के लिए आफन्ती को दे दें।

घर लौटकर आफन्ती ने सारा सोना गरीबों में बांट दिया।

एक हफ्ते बाद वह मुंह लटकाकर खाली हाथ बादशाह के

---

* *एक ल्याङ सोना-चांदी लगभग 1 औंस के बराबर होता है।*

* *एक चिन = आधा किलोग्राम।*



पास जा पहुंचा। उसे देखते ही बादशाह खुशी से उछल पड़ा और बोला:

"तुम आ गए, आफन्ती? पर सोना ढोने वाली गाड़ियों का काफिला कहां है?"

"जहांपनाह, क्या बताऊं? वह माथा पकड़कर बिल्कुल रोता हुआ बोला। "इस बीच एक भी बूंद पानी नहीं पड़ा और सोने की सारी फसल सूख गई। फसल तो दूर रही, बीज से भी पूरी तरह हाथ धोना पड़ा!"

आफन्ती की बात सुनकर बादशाह गुस्से से पागल हो उठा और गरजकर बोला:

"तुम सफेद झूठ बोल रहे हो, आफन्ती! क्या कहीं सोना भी सूख सकता है? तुम मुझे धोखा देना चाहते हो!"

"मेरी बात पर आपको ताज्जुब क्यों हो रहा है, जहांपनाह?" आफन्ती ने उत्तर दिया। "अगर आपको इस बात पर यकीन नहीं है कि सोना सूख सकता है, तो इस बात पर कैसे यकीन हो गया कि सोने को जमीन में बोया जा सकता है और उसकी फसल काटी जा सकती है!"

बादशाह अवाक रह गया, जैसे उसके मुंह में किसी ने मिट्टी का लोंदा ठूंस दिया हो।

बुद्धि की प्रचुरता

गांव में एक नया काजी आया। किसी ने आफन्ती के सामने उसकी तारीफ के पुल बांधते हुए कहा:

"सुना तुमने? नए काजी को पूरे का पूरा कुरान शरीफ जबानी याद है। उसके मस्तिष्क में बुद्धि कूट-कूटकर भरी हुई है।"

"हां, यह सम्भव है," आफन्ती ने कहा। "चूंकि काजी को अपनी बुद्धि इस्तेमाल ही नहीं करनी पड़ती, इसलिए उसके मस्तिष्क में बुद्धि कूट-कूटकर भरी होना स्वाभाविक है।"

अमुक दिन आइए

आफन्ती ने एक छोटी-सी रंगाई वर्कशाप खोली और गांव-वासियों के लिए कपड़ा रंगना शुरू कर दिया। सब लोग उसकी रंगाई की तारीफ करने लगे। यह सुनकर एक सेठ को बहुत जलन महसूस होने लगी और वह आफन्ती को परेशान करने के इरादे से कपड़े का एक टुकड़ा लेकर आफन्ती की वर्कशाप में जा पहुंचा। दरवाजे के अन्दर घुसते ही सेठ बुलन्द आवाज में बोला:

"आफन्ती, जरा यह कपड़ा तो अच्छी तरह रंग दो। मैं देखना चाहता हूं तुम्हारा हुनर कैसा है।"

"सेठ जी, आप कैसा रंग चाहते हैं?"

"रंग? रंग के बारे में मेरी कोई खास पसन्द तो नहीं है, पर मुझे सफेद, लाल, नारंगी, पीला, हरा, आसमानी, नीला और बैंगनी रंग कतई अच्छा नहीं लगता। समझे कि नहीं?"

"समझ गया हूं, अच्छी तरह समझ गया हूं! मैं जरूर आपकी पसन्द की रंगाई कर दूंगा!" आफन्ती ने सेठ का मंसूबा भांपते हुए उसके हाथ से कपड़े का टुकड़ा ले लिया।

"अच्छा, तो इसे लेने किस दिन आऊं?" सेठ ने खुश होकर कहा।

आफन्ती ने कपड़े को अलमारी में बन्द करके उसमें ताला लगा दिया और सेठ से बोला, "आप इसे लेने सोमवार, मंगलवार, बुधवार, गुरूवार, शुक्रवार, शनिवार और रविवार को छोड़कर किसी भी दिन आ सकते हैं!"

खरबूजों के दाम

एक बार सर्दियों में आफन्ती ने एक हरारतखाना बनाया और उसमें खरबूजे उगाए। जब खरबूजे पक गए, तो आफन्ती ज्यादा पैसे कमाने के इरादे से कुछ अच्छे खरबूजे चुनकर बादशाह के पास ले गया। बादशाह ने खरबूजे रख लिये और आफन्ती के खरबूजों की तारीफ करते हुए तीन बार "बहुत अच्छा" कहा। पर पैसा एक भी नहीं दिया।

आफन्ती को खाली हाथ महल से लौटना पड़ा। उस समय उसे बेहद भूख लग रही थी। पर कोई खाने की चीज खरीदने के लिए उसकी जेब में एक भी दमड़ी नहीं थी। थोड़ी देर सोचने के बाद वह एक रेस्तरां में जा पहुंचा और बीस समोसे खा गया।

इसके बाद वह उठा और बुलन्द आवाज में तीन बार "बहुत अच्छा" कहकर रेस्तरां से बाहर जाने लगा।

"पैसे तो देते जाओ" रेस्तरां का मालिक चिल्लाया। "अभी तुमने पैसे नहीं दिए।"

"क्या कहा?क्या मैं अभी-अभी तुम्हें पैसे नहीं दे चुका हूं?" आफन्ती बोला।

रेस्तरां का मालिक उसे पकड़कर बादशाह के पास ले गया। जब बादशाह ने यह सुना कि आफन्ती ने पैसे दिए बिना ही रेस्तरां में समोसे खाए हैं, तो वह नाराज होकर बोला:

"आफन्ती, तुमने पैसे दिए बगैर रेस्तरां में समोसे क्यों खाए?"

"जहांपनाह, मैंने कोई गलती नहीं की," आफन्ती ने जवाब

दिया। "रेस्तरां का मालिक बहुत लालची है। मैने इसके यहां सिर्फ बीस समोसे खाए, और आपने जो तीन "बहुत अच्छा' मेरे खरबूजे खरीदने के बाद मुझे दिये थे वे सब मैंने इसे दे दिए। फिर भी यह मुझसे पैसे मांग रहा है!"

यह सुनकर बादशाह निरुत्तर हो गया।

नीति वचन

आफन्ती कुछ धन कमाने के इरादे से एक रस्सी उठाकर बाजार में कुलियों की कतार में खड़ा हो गया। इतने में एक तोंदू सेठ वहां आया और जोर से बोला:

"मेरे इस संदूक में चीनी मिट्टी के बढ़िया बर्तन हैं। अगर कोई इसे उठाकर मेरे घर पहुंचा देगा, तो मैं उसे तीन नीति वचन सुनाऊंगा।"

उसकी बात की किसी कुली ने परवाह नहीं की। सिर्फ आफन्ती प्रभावित हो गया। उसने सोचा: पैसे तो हर जगह मिल सकते हैं, पर नीति वचन आसानी से नहीं सुने जा सकते। क्यों न इसका सामान उठाकर तीन नीति वचन सुन लूं और अपनी अक्ल बढ़ा लूं। आफन्ती सन्दूक उठाकर सेठ के साथ चल पड़ा।

रास्ते में आफन्ती ने सेठ से नीति वचन सुनाने का आग्रह किया। सेठ बोला:

"पहला नीति वचन यह है: अगर कोई कहे कि भूखा पेट भरे

पेट से ज्यादा अच्छा है, तो उस पर हरगिज यकीन न करो!"

"वाह! कितनी बढ़िया बात है, सेठ जी!" आफन्ती बोला। "अब दूसरा नीति वचन सुनाइए।"

"अगर कोई कहे कि पैदल चलना घोड़े की सवारी से ज्यादा आरामदेह है, तो उस पर हरगिज यकीन न करो!"

"बिल्कुल सही फरमाया आपने, सेठ जी! इससे बढ़िया नीति वचन और क्या हो सकता है?" आफन्ती बोला। "अब तीसरा नीति वचन भी सुना दीजिए।"

"अगर कोई कहे कि दुनिया में तुमसे बड़ा बेवकूफ कुली मिल सकता है, तो उस पर हरगिज यकीन न करो।"

सेठ का तीसरा नीति वचन सुनते ही आफन्ती ने अपने हाथ का सन्दूक यकायक छोड़ दिया और वह धम्म की आवाज के साथ जमीन पर गिर पड़ा। सन्दूक की ओर इशारा करते हुए आफन्ती ने सेठ से कहा:

"अगर कोई कहे कि इस सन्दूक में रखे चीनी मिट्टी के बर्तन टूटे नहीं हैं, तो उस पर हरगिज यकीन न करो।"

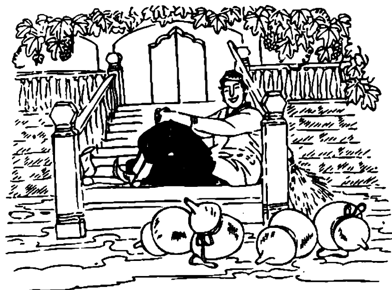
आदेश का पालन

जब आफन्ती छोटा था, तो वह गांव के एक सेठ का आंगन बुहारा करता था। सेठ उसे साल के अन्त में तनख्वाह देता था और अक्सर तनख्वाह न देने का बहाना ढूंढता रहता था। एक बार जब साल का अन्तिम दिन आ गया तो सेठ ने सुबह-सवेरे ही आफन्ती

को बुला भेजा और बोला:

"नसरूद्दीन, आज तुम आंगन बुहारते समय एक भी बूंद पानी नहीं छिड़कोगे। पर बुहारने के बाद आंगन गीला-सा लगना चाहिए। अगर तुम ऐसा न कर पाए, तो तुम्हारी इस साल की पूरी तनख्वाह कट जाएगी और अगले साल तुम्हें मेरे यहां काम नहीं मिलेगा!" यह कहकर सेठ नए साल के लिए कुछ जरूरी चीजें खरीदने शहर चला गया।

आफन्ती ने चुपचाप सेठ का आंगन बुहार डाला और फिर गोदाम से तेल की सभी तुम्बियां बाहर निकालकर सारा तेल आंगन में छिड़क दिया। जब यह काम पूरा हो गया, तो वह जीने पर बैठकर तनख्वाह के लिए सेठ की बाट जोहने लगा।



शाम को सेठ शहर से वापस लौटा। जब उसने देखा कि आफन्ती ने उसका सारा तेल आंगन में छिड़क दिया है, तो वह बौखलाकर चिल्लाया:

"अरे ओ उल्लू की औलाद! मेरा सारा तेल आंगन में क्यों फैला दिया? तुझे इसका मुआवजा देना होगा!"

"गुस्सा क्यों दिखा रहे हैं, सेठ जी?" आफन्ती खड़ा होकर बोला, "क्या मैंने आपके आंगन में एक भी बूंद पानी छिड़का है?क्या आपका आंगन गीला-सा नहीं लग रहा है? क्या मैंने आपके आदेश के अनुसार काम नहीं किया है? इस साल की तनख्वाह फौरन मेरे हवाले कर दीजिए। अगले साल हजार मिन्नत-खुशामद करने पर भी मैं आपके पास हरगिज काम नहीं करूंगा!"

सेठ अवाक रह गया। आफन्ती को पूरी तनख्वाह देने के सिवाय उसके सामने और कोई चारा नहीं था।

जटिल प्रश्न

बादशाह अपने को बहुत अक्लमन्द समझता था। वह अक्सर तरह-तरह के कठिन सवाल पूछकर दूसरों को नीचा दिखाने की कोशिश करता था। एक बार उसने बारह हजार विद्वानों को बुलाकर उनसे पूछा कि पृथ्वी का केन्द्रबिन्दु कहां है? एक भी विद्वान उसके सवाल का जवाब नहीं दे पाया। यह देखकर बादशाह बेहद खुश हुआ। उसने पूरे राज्य में इश्तहारों और मुनादी के जरिए



ऐलान करा दिया कि अगर कोई इस कठिन सवाल का सही जवाब देगा तो उसे इनाम मिलेगा, लेकिन जवाब गलत हुआ तो उसे सजा दी जाएगी।

बहुत से लोगों ने इश्तहार पढ़ा और मुनादी सुनी। पर बादशाह के सवाल का जवाब देने कोई नहीं आया। सिर्फ आफन्ती अपने गधे पर सवार होकर राजमहल की तरफ चल पड़ा।

बादशाह ने आफन्ती से पूछा:

"क्या तुम जानते हो कि पृथ्वी का केन्द्रबिन्दु कहां है?"

"हां जहांपनाह, जानता हूं," आफन्ती ने जवाब दिया, "पृथ्वी का केन्द्रबिन्दु मेरे गधे की सामने की बाईं टांग के नीचे है।"

"बिल्कुल झूठ है, मुझे तुम्हारी बात पर बिल्कुल यकीन नहीं है!"

"आप पृथ्वी को नापकर देख लीजिए। अगर मेरी बात गलत साबित हो, तो मुझे जरूर सजा दीजिए।"

बादशाह निरुत्तर हो गया। उसने फिर एक सवाल किया, "अच्छा, यह बताओ आकाश में कुल कितने सितारे हैं?"

"आपकी दाढ़ी के बालों के बराबर!" आफन्ती ने फौरन जवाब दिया।

"बिल्कुल झूठ है, मुझे तुम्हारी बात पर बिल्कुल यकीन नहीं है।"

"मेरी बात सौ फीसदी सही है। अगर यकीन न हो तो आकाश में जाकर एक बार सारे सितारों को गिन लीजिए। अगर उनकी संख्या में एक का भी फर्क मिले, तो मुझे जरूर सजा दीजिए!"

"पर यह तो बताओ कि मेरी दाढ़ी में कितने बाल हैं? फौरन बताओ!"

आफन्ती एक हाथ से अपने गधे की पूंछ उठाकर दूसरे हाथ से बादशाह के मुंह की तरफ इशारा करता हुआ बोला:

"आपकी दाढ़ी के बालों की संख्या मेरे गधे की पूंछ के बालों की संख्या के बराबर है।"

बादशाह बौखलाकर बोला:

"बदतमीज कहीं का! यह कैसे मुमकिन हो सकता है?"

आफन्ती के चेहरे पर जरा भी शिकन नहीं आई। वह बोला:

"जहांपनाह, पहले अपनी दाढ़ी के बाल गिन लीजिए, और

फिर मेरे गधे की पूंछ के। तब आपको मालूम हो जाएगा कि मेरी बात सौ फीसदी सही है।"

उसकी यह दलील सुनकर बादशाह निरुत्तर हो गया।

अन्दर रहना ठीक नहीं

एक आदमी ने आफन्ती से पूछा:

"किसी के जनाजे में ताबूत के आगे रहना ठीक है या उसके पीछे?"

आफन्ती ने उसे अपने करीब बुलाकर धीरे से कान में कहा:

"ताबूत के आगे-पीछे रहने से कोई फर्क नहीं पड़ता। सिर्फ उसके अन्दर रहना ठीक नहीं।"

इंसाफ

एक बार एक गरीब आदमी आफन्ती के घर गया और अनुरोधपूर्वक बोला:

"आफन्ती भाई, क्या तुम मेरी कुछ मदद कर सकते हो?"

"बेशक, दूसरों की मदद करना न सिर्फ गौरवशाली है, बल्कि इससे मेरे मन को तसल्ली भी होती है। बताओ, मैं तुम्हारी क्या मदद कर सकता हूं?" आफन्ती ने उससे कहा।

गरीब आदमी ने एक उसांस ली और बोला: "हम गरीब



कितने बदनसीब हैं! कल मैं एक सेठ के रेस्तरां के आगे कुछ देर खड़ा रहा। सेठ ने कहा कि मैंने उसके पकवानों की खुशबू सूंघ ली है और मुझे इसके लिए उसे पैसे देने होंगे। जब मैंने इनकार कर दिया, तो वह इस मामले को काजी के पास ले गया। आज काजी के सामने मेरी पेशी है। क्या तुम मेरी वकालत कर सकते हो?"

"जरूर!" आफन्ती फौरन राजी हो गया और उसके साथ काजी के पास जा पहुंचा।

सेठ काजी के पास पहले से ही पहुंच चुका था और उसके साथ गपशप कर रहा था।

गरीब आदमी को देखते ही काजी ने पूछताछ किए बिना फटकार लगाई:

"तुम्हें शर्म नहीं आती! रेस्तरां के पकवानों की खुशबू सूंघने

के बाद भी तुम पैसे देने से इनकार कर रहे हो! फौरन सेठ जी को पैसे दे दो!"

"जरा ठहरिये, काजी साहब!" आफन्ती ने आगे बढ़कर काजी को सलाम किया और धीरे से बोला: "ये मेरे बड़े भाई हैं। इनके पास पैसा नहीं है। सेठ जी को पैसे मैं दूंगा।"

आफन्ती ने अपने कमरबन्द से एक छोटी-सी थैली निकाली जिसमें तांबे के सिक्के रखे हुए थे। उसने थैली को सेठ के कान के पास ले जाकर कई बार हिलाया और पूछा:

"सेठ जी, क्या थैली में रखे पैसों की खनखनाहट आप सुन रहे हैं?"

"हां, सुन रहा हूं, जरूर सुन रहा हूं!" सेठ ने कहा।

"तो ठीक है। कल इन्होंने आपके पकवानों की खुशबू सूंघी थी, और आज आपने मेरे पैसों की खनखनाहट सुन ली है। अब हमारा हिसाब साफ हो गया है।"

इतना कहकर आफन्ती अपने गरीब साथी का हाथ पकड़कर वहां से चला गया।

प्यासी जेब

एक बार आफन्ती अपने एक दोस्त के घर दावत में गया। मेहमानों की खातिरदारी के लिए मेजबान ने बकरी का भुना हुआ गोश्त, सिवैयां, नान और तरह-तरह के मेवा-मिष्ठान तैयार किए थे।



आफन्ती की बगल में बैठा एक मेहमान न सिर्फ ज्यादा से ज्यादा भोजन चट करता जा रहा था, बल्कि बहुत से पकवान उठा-उठाकर अपनी जेब में भरता जा रहा था। यह देखकर आफन्ती ने एक चायदानी उठा ली और उसकी जेब में चाय उड़ेलने लगा।

"यह क्या बदतमीजी है, आफन्ती?" वह आदमी बौखलाकर बोला।

"चिल्लाओ मत," आफन्ती ने सबके सामने ऊंची आवाज में कहा, "तुम्हारी जेब बहुत सी चीजें खा चुकी है। उसे प्यास लग रही होगी। इसलिए चाय पिला रहा हूं!"

आलसी को सबक

गांव में एक आलसी आदमी रहता था। एक दिन उसने आफन्ती से कहा:

"आफन्ती, कल मैं तुम्हारे घर खाना खाने आऊंगा। भाभी से कहकर कुछ अच्छे-अच्छे पकवान बनवा देना।"

"बहुत अच्छा," आफन्ती ने उत्तर दिया।

दूसरे दिन वह आदमी सुबह-सवेरे ही आफन्ती के घर जा पहुंचा और बुलन्द आवाज में बोला:

"आफन्ती, कुछ पानी तो ले आओ। खाना खाने से पहले जरा हाथ धो लूं।"

आफन्ती उसके लिए पानी ले आया। पानी उसके हाथ पर डालता हुआ वह बोला:

"माफ करना भाई, आज मैं तुम्हें खाना नहीं खिला पाऊंगा।"

"क्यों, क्या बात है?"

"बाकी सब सामान तो तैयार है, पर एक चीज की कमी रह गई है, एक छोटी सी चीज की!"

"वह कौन सी चीज है?"

आफन्ती आलसी आदमी के कान के पास जा पहुंचा और धीरे से फुसफुसाया:

"काम करने वाले दो हाथों की!"

गधों का गवर्नर

बादशाह आफन्ती को अपमानित करना चाहता था। उसने आफन्ती को राजमहल में बुलवाया और मंत्रियों के सामने बड़ी संजीदगी से ऐलान किया:

"आज से मैं आफन्ती को राजधानी के गधों का गवर्नर नियुक्त करता हूं।"

सब मंत्री खिलखिलाकर हंस पड़े। लेकिन आफन्ती फौरन उठ खड़ा हुआ और बड़े अदब से बादशाह को सलामी देने के बाद शान से बादशाह की गद्दी पर बैठ गया।

"यह क्या बदतमीजी है?" बादशाह ने खीझकर कहा, "तुम्हें मेरी गद्दी पर बैठने की जुर्रत कैसे हुई? फौरन उतर जाओ!"

"शोर न मचाओ! किसी गधे को मेरे सामने रेंकने की इजाजत नहीं है! सबको गधों के गवर्नर आफन्ती का हुक्म मानना होगा!"

पैसे का मातम

आफन्ती एक बड़ी-सी नदी के किनारे अकेला बैठा था। इतने में दो मोटे-ताजे आदमी वहां आ पहुंचे। नदी पर पुल नहीं था। दोनों आफन्ती से प्रार्थना करने लगे:

"भाई साहब, हम दोनों राजधानी के सबसे बड़े सेठ हैं। हमने सुना है पड़ोस के राज्य में खूब मुनाफा कमाया जा सकता है।

इसलिए हम व्यापार करने वहां जा रहे हैं। अगर आप हमें अपनी पीठ पर बिठाकर नदी पार करा दें, तो हम आपको एक-एक ग्वानपाओ देंगे।"

आफन्ती ने कहा: "नदी का बहाव बहुत तेज है, पानी भी काफी गहरा है। अगर मैं या आप दोनों बह गए, तो क्या होगा?"

"कोई बात नहीं, भाई साहब। व्यापारियों के लिए जान से ज्यादा पैसे की कीमत है!" एक सेठ ने कहा।

"इस बात की चिन्ता न कीजिए, भाई साहब। अगर हम नदी में बह भी गए तो भी आपको दोषी नहीं ठहराएंगे!" दूसरा सेठ समर्थन करता हुआ बोला।

"तो ठीक है!" आफन्ती राजी हो गया। उसने एक सेठ को नदी के उस पार पहुंचा दिया और उससे एक ग्वानपाओ वसूल कर लिया।

जब वह दूसरे सेठ को पीठ पर उठाकर मंझधार में पहुंचा, तो जानबूझकर फिसल गया और नदी में गिर पड़ा। सेठ नदी में बह गया।

उस पार खड़े सेठ ने जब "बचाओ! बचाओ!" की आवाज सुनी तो वह फूट-फूटकर रोने लगा।

आफन्ती भी उस पार पहुंचकर रोने और मातम मनाने लगा।

यह देखकर सेठ ने चकित होकर पूछा:

"वह मेरा साथी था। इसलिए मैं रो रहा हूं और मातम मना रहा हूं। लेकिन आप किस बात का मातम मना रहे हैं?"

"ठीक है, आप तो अपने साथी का मातम मना रहे हैं," आफन्ती बोला, "पर मैं अपने दूसरे ग्वानपाओ का मातम मना रहा हूं, क्योंकि नदी में सेठ जी के साथ वह भी बह गया है!"

पीठ दिखाना

एक बार आफन्ती ने बादशाह की खिल्ली उड़ाई तो बादशाह ने उसे राजमहल से निकाल दिया और गुस्से में आकर कहा:

"आज से मैं तुम्हारा मुंह कभी नहीं देखूंगा!"

लेकिन इस घटना के कुछ ही दिन बाद पड़ोस के राज्य से कुछ विद्वान बादशाह से मिलने आए। उन्होंने बादशाह से एक जटिल सवाल पूछ लिया। बादशाह लगातार तीन दिन दिमाग खपाता रहा। फिर भी उस सवाल का जवाब नहीं दे सका।

एक मंत्री ने प्रस्ताव रखा:

"जहांपनाह, हमारे मुल्क में इस सवाल का जवाब आफन्ती के सिवाय और कोई नहीं दे सकता। आप आफन्ती की गुस्ताखी माफ कर दीजिए और उसे राजमहल में बुलाकर इन विद्वानों के सवाल का जवाब देने का हुक्म दीजिए।"

बादशाह को लाचार होकर आफन्ती को राजमहल में बुलाने का हुक्म जारी करना पड़ा।

जब आफन्ती राजमहल के दरवाजे पर पहुंचा, तो वह बादशाह की तरफ पीठ करके आगे बढ़ने लगा।

यह देखकर बादशाह न तो हंस ही पाया और न रो ही पाया।

उसने कहा:

"आफन्ती, यह क्या तमाशा कर रहे हो? मेरी तरफ मुंह करो, मुझे तुमसे एक जरूरी काम है।"

"मैं आपकी तरफ मुंह करने की जुर्रत कैसे कर सकता हूं, जहांपनाह?" आफन्ती तपाक से बोला, "पिछली मर्तबा आपने कहा था कि आप मेरा मुंह फिर कभी नहीं देखेंगे। इसलिए आज आपको अपनी पीठ दिखाने के सिवाय मेरे सामने और कोई उपाय नहीं रह गया है!"

राजगद्दी का वारिस

बादशाह की बेगम गर्भवती हो गई। उसने आफन्ती को बुलवाया और उससे कहा कि अपना ज्योतिष लड़ाकर यह बताए कि उसके लड़का होगा या लड़की।

"आपकी बेगम के जरूर लड़की पैदा होगी," आफन्ती ने जवाब दिया।

"अच्छा, अब यह बतलाओ लड़का पैदा होना बेहतर होगा या लड़की?"

"दोनों ही ठीक हैं। लड़का भी इंसान होता है और लड़की भी। दोनों में कोई फर्क नहीं!"

"नादान न बनो आफन्ती!" बादशाह ने कहा, "लड़की हमारे किस काम की होगी?अगर लड़का पैदा हुआ, तो हमारी राजगद्दी

का वारिस बनेगा।"

"लेकिन जहांपनाह आप इस बात की चिन्ता क्यों करते हैं?अगर आपकी राजगद्दी खाली रह गई, तो रिआया को राहत की सांस लेने का मौका मिलेगा!"

खाली बर्तन

एक बार बादशाह और प्रधान मंत्री शिकार खेलने गए। जब लौट रहे थे, तो गरमी के मारे उन्हें बेहद प्यास लग गई। दोनों आफन्ती के घर के दरवाजे पर रूक गए। प्रधान मंत्री ने जोर से पुकारा:

"अरे, कोई घर के अन्दर है क्या?जल्दी से दही की लस्सी ले आओ। उसमें कुछ भी डाल देना! हमें बेहद प्यास लग रही है।" यह कहते समय उसने घोड़े से नीचे उतरने का शिष्टाचार भी नहीं दिखाया।

आफन्ती खाली हाथ आहिस्ता-आहिस्ता घर से बाहर निकला। पहले उसने बादशाह को सलाम किया और फिर बड़े अदब से बोला:

"माफ कीजिए! मैं सुबह से ही खेत में काम कर रहा था। अभी-अभी लौटा हूं। बेहद प्यास लगी थी, इसलिए सारा दही लस्सी बनाकर पी गया। अब घर में थोड़ा भी दही नहीं है।"

निराश होकर बादशाह और प्रधान मंत्री को अपनी राह लेनी

पड़ी। लेकिन जब वे काफी दूर चले गए, तो आफन्ती हाथ में दही का बर्तन लिये मकान के छज्जे पर खड़ा होकर बुलन्द आवाज में पुकारने लगा:

"बादशाह सलामत, वापस आ जाइए!"

बादशाह और प्रधान मंत्री ने दूर से दही का बर्तन देखा, तो बहुत खुश हुए। घोड़ों को वापस मोड़कर वे फौरन आफन्ती के पास जा पहुंचे। जब वे बिल्कुल करीब पहुंच गए, तो आफन्ती ने दही का बर्तन उनके सामने पलट दिया और बोला:

· "बड़े अफसोस की बात है! आप खुद देख लीजिए, क्या यह बर्तन सचमुच खाली नहीं है?"

मजिस्ट्रेट और कुत्ता

एक बार काउन्टी-मजिस्ट्रेट ने आफन्ती को आदेश दिया कि वह एक ऐसा खूंखार कुत्ता ढूंढ लाए जो लोगों को काटता हो और उन पर झपटता हो। कुछ दिन बाद, आफन्ती एक ऐसा कुत्ता ले आया, जो दुम दबाकर बैठा रहता था और अजनबी के सामने भी नहीं भौंकता था। यह देखकर मजिस्ट्रेट उस पर बरस पड़ा:

"आफन्ती, तुम्हारे कान नहीं हैं क्या? मैंने तुमसे किस किस्म का कुत्ता ढूंढने को कहा था? क्या तुमने सुना नहीं?"

"हां जनाब, मैंने अच्छी तरह सुन लिया था। कुत्ता चाहे किसी किस्म का हो, आपके यहां आकर वैसा ही बन जाएगा!" आफन्ती

ने तपाक से उत्तर दिया। "यह कुत्ता भी कुछ ही दिनों में आपसे सब तरह के हुनर सीख लेगा। लोगों को काटने या उन पर झपटने का ही नहीं, उनके बटुवे खोलकर पैसे निकालने का तरीका भी जल्दी सीख जायेगा!"

बच्चा जनने वाली देगची

एक बार आफन्ती ने एक सेठ से देगची उधार ली। कुछ दिन बाद वह उस देगची के अन्दर एक छोटी देगची रखकर सेठ को वापस देने जा पहुंचा। यह देखकर सेठ खुश भी हुआ और हैरान भी। उसने पूछा:

"आफन्ती भैया, यह छोटी देगची क्यों ले आए?"

"सेठ जी," आफन्ती ने उत्तर दिया, "आपसे मैंने जो देगची उधार ली थी, वह गर्भवती थी। मेरे घर आने के दो दिन बाद ही उसने इस छोटी देगची को जन्म दे दिया। अब मैं दोनों देगचियां आपको लौटाने आया हूं।"

"अच्छा, तो यह बात है! अगर तुम्हें फिर जरूरत पड़े, तो बिना हिचकिचाहट के फिर ले जाना!" यह कहकर सेठ ने खुशी-खुशी दोनों देगचियां रख लीं।

दो दिन बाद आफन्ती फिर सेठ के घर जा पहुंचा। उसने बताया कि उसके घर बहुत से मेहमान आए हुए हैं और एक बड़ी



देगची की जरूरत है। सेठ को पूरी उम्मीद थी कि आफन्ती फिर देगची उधार लेने आएगा। इसलिए उसने फौरन अपनी सबसे बड़ी देगची निकालकर दे दी।

एक हफ्ता बीत गया, दो हफ्ते बीत गए, एक महीना होने को आया। पर आफन्ती की छाया तक नहीं दिखाई दी। अपनी देगची वापस लेने के लिए सेठ बेचैन हो उठा। तभी आफन्ती गधे पर सवार हो सेठ के घर जा पहुंचा। उसके चेहरे पर विषाद था।

"हाय," आफन्ती ने एक ठण्डी सांस ली। "सेठ जी, बड़ी बुरी खबर है। मेरे घर जाने के दो दिन बाद ही आपकी देगची मर गई। मैंने सोचा था, उसके मरने के चालीस दिन बाद* आपको सूचित

---

* *उइगर जाति के रिवाज के मुताबिक आदमी के मरने के चालीस दिन बाद तक मातम मनाया जाता था।*

करूंगा। पर यह सोचकर कि आप कहीं परेशान न हो जाएं, समय से कुछ दिन पहले ही बताने आ गया हूं।"

"कैसी ऊलजलूल बातें बक रहे हो!" सेठ तैश में आकर बोला। "तुम मुझे उल्लू बनाना चाहते हो?भला लोहे की देगची भी कहीं मर सकती है?"

"वाह सेठ जी, आप भी खूब हैं!" आफन्ती बोला। "आपने यह तो मान लिया कि लोहे की देगची बच्चा जन सकती है और उसके बच्चे को स्वीकार भी कर लिया, पर यह मानने को तैयार नहीं हैं कि लोहे की देगची मर भी सकती है!"

सबसे ज्यादा खुशी का दिन

बादशाह ने आफन्ती से पूछा:

"आफन्ती, तुम पूरे राज्य का दौरा कर चुके हो। अवाम क्या सोचती है, यह अच्छी तरह जानते हो। जरा यह तो बताओ, अवाम किस दिन को सबसे ज्यादा खुशी का दिन मानती है?"

आफन्ती ने फौरन जवाब दिया:

"जिस दिन आप सकुशल बहिशत में पहुंच जाएंगे!"

चोरों से रक्षा

एक बार आफन्ती राजमहल के सामने से गुजर रहा था। उसने देखा, मंत्रियों की निगरानी में बहुत से मजदूर महल के अहाते की दीवार को पहले से ज्यादा ऊंचा बना रहे हैं। उसे बड़ा ताज्जुब हुआ। आगे बढ़कर पूछा:

"यह दीवार पहले ही काफी ऊंची है। इसे और ऊंचा बनाने की क्या जरूरत है?"

"तुम भी कैसे मूर्ख हो, आफन्ती?" मंत्रियों ने जवाब दिया। "इतनी-सी बात भी नहीं समझते! यह दीवार बाहर से आने वाले चोरों को रोकने के लिए बनाई जा रही है, ताकि वे राजमहल से सोना-चांदी और हीरा-मोती न चुरा ले जाएं।"

"हां, बाहर के चोर तो यह दीवार फांदकर अन्दर नहीं घुस पाएंगे," आफन्ती ने मंत्रियों की तरफ इशारा करते हुए कहा। "मगर यह तो बताइए कि महल के अन्दर के चोरों को कैसे रोका जा सकेगा?"

पानी देखकर प्यास बुझाना

जाड़ों की रात थी। कड़ाके की सर्दी पड़ रही थी। बादशाह चालीस लिहाफ ओढ़ने के बाद भी ठिठुर रहा था। उसने आफन्ती को राजमहल में बुलाकर उससे कहा:

"आफन्ती, अगर तुम सिर्फ एक कमीज पहनकर महल के आंगन में पूरी रात बिता दो, तो मैं तुम्हें एक सौ ग्वानपाओ दूंगा।"

"ठीक है," आफन्ती ने अपना रूईदार कोट उतारकर बादशाह को दे दिया और आंगन में चला गया। उत्तर से आने वाली हवा तीर की तरह हड्डियों में चुभ रही थी। उसने देखा आंगन के कोने में एक पत्थर का बेलन पड़ा है। वह आगे बढ़कर बेलन को धकेलने लगा। पूरी रात आंगन में बेलन धकेलता रहा। इस तरह उसे जरा भी सर्दी नहीं लगी, उलटे गर्मी लगने लगी और उसका सारा शरीर पसीने से तरबतर हो गया।

सवेरे जब बादशाह की नींद खुली, तो उसने सोचा आफन्ती सर्दी से ठिठुरकर जरूर मर चुका होगा। लेकिन खिड़की खोलकर बाहर देखा, तो हैरान रह गया। आफन्ती आंगन में खुशी से चहलकदमी कर रहा था। बादशाह उसे एक सौ ग्वानपाओ देने को हरगिज तैयार नहीं था। इसलिए उसने एक तरकीब खोज निकाली। आफन्ती को अन्दर बुलाकर उसने पूछाः

"यह तो बताओ, कल रात आसमान में चांद निकला था या नहीं?"

"हां, निकला था," आफन्ती ने जवाब दिया।

"अब मैं समझा!" बादशाह बोला। "तुम जरूर चांदनी सेंकते रहे हो। ऐसी हालत में भला तुम्हें ठण्ड कैसे लग सकती थी?चांद की किरणों की गर्मी में एक कमीज पहनकर रात बिताना कोई मुश्किल काम थोड़ा है। तुम्हारी जगह मैं होता, तो नंगे बदन ही

पूरी रात बिता देता!" यह कहकर उसने आफन्ती को वहां से जाने का आदेश दे दिया।

कुछ महीने बीतने पर गर्मी का मौसम आ गया। एक दिन बादशाह और उसके मंत्री शिकार खेलने बाहर गए। गोबी रेगिस्तान में सूरज अंगारे बरसा रहा था। प्यास से तड़पते हुए वे लोग पानी पीने आफन्ती के घर जा पहुंचे।

आफन्ती एक कुएं के पास बैठा था। उसे देखते ही बादशाह जोर से बोला:

"यहां कहीं ठंडा पानी है?मुझे फौरन ठंडा पानी चाहिए!"

"हां बादशाह सलामत, यहां ठंडा पानी है," आफन्ती बोला।

"कहां है?" बादशाह ने नजदीक आकर पूछा।

"इस कुएं में है," आफन्ती ने बादशाह को कुएं का पानी दिखाते हुए कहा।

"उसे कुएं से बाहर क्यों नहीं निकालते?सिर्फ पानी देखकर प्यास कैसे बुझाई जा सकती है?" बादशाह तैश में आकर बोला।

"जहांपनाह!" आफन्ती ने झट उत्तर दिया, "जब चांदनी सेंककर ठण्ड दूर की जा सकती है, तो भला पानी देखकर प्यास क्यों नहीं बुझाई जा सकती?"

तपस्या का बेहतरीन तरीका

एक बार बादशाह ने आफन्ती से पूछा: "मेरे लिए तपस्या का कोई ऐसा तरीका बताओ जिससे मरने के बाद बहिश्त मिलने की गारन्टी हो जाए।" आफन्ती ने फौरन उत्तर दिया: "कोई काम किए बगैर दिन-रात गहरी नींद सोए रहिए।"

यह सुनकर बादशाह को बड़ा अजीब लगा। वह बोला:

"क्या सोना भी एक तरह की तपस्या है?"

"हां जहांपनाह, गहरी नींद सोना ही आपके लिए तपस्या का बेहतरीन तरीका है," आफन्ती ने उत्तर दिया। "इससे आप बुरे कामों से दूर रहेंगे। कहावत है: जागे हुए बदमाश से सोया हुआ बदमाश बेहतर होता है।"

मरा हुआ आदमी

काउन्टी-मजिस्ट्रेट बीमार हो गया। कई मशहूर हकीमों से इलाज कराने और बहुत सी महंगी दवाइयां खाने के बाद भी वह चंगा नहीं हुआ। लाचार होकर उसे आफन्ती से इलाज कराना पड़ा।

आफन्ती ने मजिस्ट्रेट को पलंग पर लेटे देखा, तो उसके माथे पर बल पड़ गए। वह नाराज होकर घरवालों से बोला:

"मैं जिन्दा आदमी का इलाज करता हूं। तुम लोगों ने इस मरे हुए आदमी का इलाज करने मुझे क्यों बुलाया?"

मजिस्ट्रेट के घरवाले परेशान हो गए। बोले:

"क्या कहा?क्या मजिस्ट्रेट साहब अब जिन्दा नहीं हैं?"

"वे शरीर से तो अभी जिन्दा हैं," आफन्ती ने उत्तर दिया, "मगर आम जनता के प्रति उनके बर्ताव को देखकर कहा जा सकता है कि उनका दिल मुर्दा हो चुका है। तुम्हीं बताओ, जब किसी का दिल मुर्दा हो चुका हो, तो क्या उसे जिन्दा आदमी कहा जा सकता है?"

पोशाक की इज्जत

एक दिन आफन्ती फटे-पुराने कपड़े पहन एक दोस्त के घर दावत खाने गया। दोस्त ने उसे अपने घर से निकाल दिया, इस डर से कि इतने गरीब आदमी के साथ दोस्ती रखने की वजह से लोग कहीं उसकी खिल्ली न उड़ाएं।

घर लौटने के बाद आफन्ती ने नए-नए शानदार कपड़े पहने और फिर उसी दोस्त के घर जा पहुंचा। इस बार दोस्त ने उसकी खूब खातिर की और उसे माननीय मेहमानों की पांत में बिठाया। दोस्त ने दस्तरखान पर रखे पकवानों की ओर इशारा करते हुए बड़े तकल्लुफ के साथ कहा:

"मेरे अजीज दोस्त, आइए, नोश फरमाइए!"

यह सुनते ही आफन्ती अपना मुंह आस्तीन के पास ले जाकर बुदबुदाने लगा:

"आइए पोशाक साहिबा, नोश फरमाइए!"

दोस्त को आफन्ती की यह हरकत कुछ अजीब-सी लगी। उसने पूछा:

"आफन्ती साहब, आप यह क्या कर रहे हैं?"

"मेरे प्यारे दोस्त," आफन्ती ने जवाब दिया, "आपने देखा नहीं? मैं अपनी उस शानदार पोशाक को खाना खिला रहा हूं जिसे आपने इतनी इज्जत बख्शी है।"

सबसे सुरीली आवाज

एक दिन एक दोस्त ने आफन्ती को खाने पर बुलाया। दोस्त संगीतप्रेमी था। उसने तरह-तरह के साज आफन्ती को सुनाए।



दोपहर का समय हो गया। आफन्ती के पेट में चूहे कूदने लगे। फिर भी दोस्त ने अपना संगीत जारी रखा। बाजा बजाने के साथ-साथ वह बीच-बीच में आफन्ती से गपशप भी करता जा रहा था। उसने पूछा:

"आफन्ती! यह तो बताओ दुनिया में सबसे सुरीली आवाज किस बाजे की होती है? दुतारे की या रवाब की?"

आफन्ती ने तुरन्त उत्तर दिया:

"अरे यार, इस समय तो करछी और कड़ाही की आवाज दुनिया में सबसे सुरीली मालूम हो रही है!"

कैसे पता चला?

आफन्ती अपने एक दोस्त को चिट्ठी लिख रहा था। इतने में एक आदमी दबे पांव उसके पास आ पहुंचा और चुपचाप उसके पीछे खड़ा होकर चोरी से चिट्ठी पढ़ने लगा। आफन्ती को पता चल गया। पर उसने कुछ भी कहे बिना चिट्ठी लिखना जारी रखा:

"...मेरे प्यारे दोस्त, मैं तुम्हें बहुत कुछ लिखना चाहता हूं। लेकिन इस समय मेरे पीछे एक बदतमीज और बेशर्म आदमी खड़ा है, जो चोरी से मेरा खत पढ़ रहा है..."

यह पढ़ते ही वह आदमी बौखला गया और आफन्ती के सामने आकर एतराज करने लगा:

"तुम मुझे गालियां क्यों दे रहे हो?मैंने तुम्हारी चिट्ठी कब पढ़ी?"

"ओह, तुम सचमुच बड़े अक्लमंद आदमी मालूम होते हो!" आफन्ती बोला। "अगर तुमने मेरी चिट्ठी नहीं पढ़ी, तो तुम्हें यह कैसे पता चला कि मैं तुम्हें गालियां दे रहा हूं?"

खुदा का पैगाम

आफन्ती बहुत गरीब था। उसे अक्सर खाने के लाले पड़ जाते थे। एक दिन वह बाजार गया और हांक लगाने लगा:

"मैं खुदा का हरकारा हूं, खुदा का हरकारा हूं!"

एक सिपाही ने उसकी हांक सुन ली और काउन्टी-मजिस्ट्रेट के पास रिपोर्ट कर दी। मजिस्ट्रेट ने आफन्ती को बुलाने के लिए फौरन आदमी भेज दिया। जब आफन्ती को उसके सामने पेश किया गया, तो उसने पूछा:

"अगर तुम खुदा के हरकारे हो, तो यह बताओ कि खुदा ने मेरे लिए क्या पैगाम भेजा है?"

"खुदा ने आपके लिए बहुत अच्छा पैगाम भेजा है!" आफन्ती बोला। "मगर पहले मेरे लिए कुछ खाना मंगवा दीजिए। खाना खाकर इतमीनान से बता दूंगा।"

मजिस्ट्रेट खुदा का पैगाम सुनने के लिए बेताब था। इसलिए उसने फौरन अपने नौकर-चाकरों को अच्छे-अच्छे पकवान लाने

का हुक्म दिया। आफन्ती ने हचक कर खाया। जब पेट भर गया तो धीरे से बोला:

"खुदा ने अपने पैगाम में कहा है: आफन्ती, मजिस्ट्रेट से कहना कि उसने अवाम की खून-पसीने की कमाई पूरी तरह हड़प ली है और अब जनता के पास फूटी कौड़ी भी बाकी नहीं रह गई है। इसलिए वह उन्हें अच्छा-अच्छा खाना खिलाए!"

बददुआ

एक बार आफन्ती ने प्रधान मंत्री से मजाक में कहा कि वह अगले दिन मर जाएगा। संयोग से दूसरे दिन प्रधान मंत्री घोड़े से गिरकर सचमुच चल बसा। यह जानकर बादशाह गुस्से से आगबबूला हो गया। उसने आफन्ती को फौरन पेश करने का हुक्म दिया। जब आफन्ती आ गया, तो बादशाह कड़कती आवाज में बोला:

"आफन्ती, तुम्हारी ही बददुआ से प्रधान मंत्री की मौत हुई है। जानते हो तुम्हें इसकी क्या सजा दी जाएगी?"

"चूंकि आप कहते हैं कि प्रधान मंत्री की मौत मेरी बददुआ से हुई है, इसलिए आप जो भी सजा देंगे, मुझे मंजूर है," आफन्ती ने उत्तर दिया।

"ठीक है," बादशाह बोला, "अगर तुम यह जान सकते हो कि प्रधान मंत्री कब मरेगा, तो यह भी जान सकते हो कि तुम खुद

कब मरोगे। जल्दी बताओ, तुम खुद कब मरोगे?अगर न बता सके तो आज ही दोजख में भेज दिए जाओगे!"

"जहांपनाह, मैं आपसे ठीक दो दिन पहले मरूंगा!" आफन्ती ने फौरन उत्तर दिया।

बादशाह खुद निश्चित रूप से लम्बी उम्र पाना चाहता था इसलिए उसे आफन्ती को छोड़ना पड़ा।

"अक्लमंदों" का सवाल

एक बार कई "अक्लमंद" आदमी एक "अत्यन्त जटिल" सवाल पर बहस कर रहे थे: "अगर नदी में आग लग गई, तो मछलियां कहां जाएंगी?"

लगातार पांच दिन बहस करते रहे पर किसी नतीजे पर नहीं पहुंच पाए। अन्त में उन्होंने इस सवाल का उत्तर जानने के लिए सबसे ज्यादा "अक्लमंद" आदमी को आफन्ती के पास भेजा।

आफन्ती ने सवाल सुनते ही फौरन जवाब दिया:

"अरे यार, तुम इस मामूली-से सवाल के बारे में इतने परेशान क्यों हो?अगर नदी में आग लग ही गई, तो क्या मछलियां पेड़ पर नहीं चढ़ जाएंगी?"

दांवपेंचों की थैली

आफन्ती की ख्याति देश-विदेश में फैल चुकी थी। पड़ोसी मुल्क के बादशाह को पता चला तो उसे बड़ा गुस्सा आया। उसने मंत्रियों को बुलाकर कहा:

"सुना है कि हमारे पड़ोसी मुल्क में आफन्ती नाम का एक शख्स अपने बादशाह को हमेशा उल्लू बनाता रहता है। क्या यह सच है?"

"हां बादशाह सलामत, यह सच है," मंत्रियों ने जवाब दिया। "हमने सुना है, आफन्ती बड़ा अक्लमंद और आलिम-फाजिल है। उसका मुकाबला कोई नहीं कर सकता।"

"यह कैसे हो सकता है!" बादशाह बोला। "एक मामूली आदमी आखिर इतना चतुर कैसे हो सकता है कि वह बादशाह को भी मात कर दे!"

"आप सही फरमा रहे हैं, हुजूर। हमें भी यकीन नहीं है!" मंत्री एक स्वर से बोले।

अन्त में बादशाह ने आफन्ती को शिकस्त देने के लिए खुद पड़ोसी मुल्क में जाने का फैसला किया, ताकि वह साबित कर सके कि बादशाह एक मामूली आदमी से कहीं ज्यादा अक्लमंद होता है।

आफन्ती के मुल्क में पहुंचकर बादशाह ने देखा, एक आदमी खेत में काम कर रहा है। बादशाह ने पूछा:

"सुना है तुम्हारे मुल्क में आफन्ती नाम का एक आदमी है। मैं

उससे मिलना चाहता हूं और देखना चाहता हूं कि वह आखिर कितना अक्लमंद है।"

यह सुनते ही आफन्ती ने उसके मन की बात भांप ली और बोला:

"मैं ही आफन्ती हूं। कहिए मैं आपकी क्या खिदमत कर सकता हूं?"

"ओह, तो तुम ही आफन्ती हो!" बादशाह कटाक्ष करता हुआ बोला: "मैंने सुना है तुम बड़े धोखेबाज हो। पर मैं तुम्हारे धोखे में हरगिज नहीं आऊंगा! क्या तुम मुझे झांसा दे सकते हो?"

"जरूर, मैं आपको जरूर झांसा दे सकता हूं!" आफन्ती ने उत्तर दिया। "मगर ठहरिए आपको कुछ देर इन्तजार करना होगा। मैं जरा घर जाकर अपनी दांवपेंचों की थैली तो उठा लाऊं। तब आपको झांसा दे सकूंगा। अगर आप मेरे दांवपेंचों से नहीं डरते, तो कृप्या थोड़ी देर के लिए मुझे अपना घोड़ा दे दीजिए, ताकि मैं जल्दी वापस लौट सकूं।"

"ठीक है, ले आओ अपनी दांवपेंचों की थैली! ऐसी दस थैलियां भी मेरे सामने बेकार साबित होंगी!"यह कहता हुआ बादशाह घोड़े से नीचे उतर गया और उसने अपने घोड़े की लगाम आफन्ती को थमा दी। "जल्दी जाओ। फौरन लौट आना, मैं तुम्हारे हर दांवपेंच को नाकाम कर दूंगा।"

आफन्ती उछलकर घोड़े पर सवार हो गया और पलभर में बादशाह की नजरों से ओझल हो गया। बादशाह उसकी बाट

जोहता रहा। इन्तजार करते-करते घण्टों बीत गए। जब सूरज पश्चिमी पहाड़ियों में डूब गया तब भी आफन्ती के लौटने के आसार नजर नहीं आए। अन्त में बादशाह समझ गया कि वह आफन्ती के झांसे में आ गया है। रात के अंधेरे में वह अपना सा मुंह लेकर चुपचाप स्वदेश लौट गया।

दुआ

एक दुष्ट मंत्री गम्भीर रूप से बीमार था। एक दिन आफन्ती उसके घर के सामने से गुजर रहा था। उसने देखा कि मंत्री का बेटा फाटक पर खड़ा है। आफन्ती ने बड़ी अन्यमनस्कता से पूछा:

"तुम्हारे अब्बाजान की तबीयत कैसी है?"

"शुक्रिया आफन्ती चाचा, आपकी दुआ से..."

"मेरी दुआ से?" आफन्ती उसकी बात काटता हुआ बोला: "मेरी दुआ से तो तुम्हारे परिवार के लोगों को इस समय मातम मनाना चाहिए था!"

दुमकटा घोड़ा

एक बार बादशाह और आफन्ती साथ-साथ शिकार खेलने गए। रात को दोनों एक ही जगह टिके। आफन्ती की हंसी उड़ाने के इरादे से बादशाह आधी रात में चुपके से उठा और उसने

आफन्ती के घोड़े के जबड़े से मांस का एक टुकड़ा काट लिया।

पौ फटने पर जब आफन्ती जागा, तो उसने देखा घोड़े के जबड़े का कुछ मांस कटा हुआ है। वह फौरन समझ गया कि यह बादशाह की शरारत है। इसलिए ज्योंही बादशाह अपने घोड़े पर सवार हुआ, आफन्ती ने चुपचाप छुरी से उसके घोड़े की दुम काट दी।

दोनों अपने-अपने घोड़े पर सवार होकर चल पड़े। बादशाह आफन्ती की हंसी उड़ाने के लिए उसके घोड़े के मुंह की तरफ इशारा करता हुआ खिलखिलाकर हंस पड़ा और बोला:

"हा-हा-हा, जरा सामने तो देखो, तुम्हारा घोड़ा मुंह फाड़कर हंस क्यों रहा है?"

आफन्ती ने ठहाका मारते हुए बादशाह के घोड़े की दुम की तरफ इशारा किया और कहा:

"हां जहांपनाह, मेरा घोड़ा दरअसल आपके घोड़े पर हंस रहा है। जरा पीछे मुड़कर अपने घोड़े को तो देखिए। उसकी दुम कहां चली गई है?"

झेंप

आफन्ती ने देखा कि एक चोर दीवार फांदकर उसके आंगन में आ घुसा है। वह फौरन कमरे के अन्दर एक खाली सन्दूक में जा छिपा।

चोर ने आफन्ती के घर के कोने–कोने को छान मारा। पर उसे एक भी काम की चीज नहीं मिली। अन्त में उसने उस पुराने सन्दूक को भी खोल दिया, जिसमें आफन्ती घुटनों के बल बैठकर छिपा हुआ था। उसे देखकर चोर को बड़ा अजीब लगा। उसने पूछा:

"बड़े ताज्जुब की बात है, तुम इसके अन्दर क्यों बैठे हो?"

आफन्ती ने जवाब दिया:

"मैं इतना गरीब हूं कि मेरे घर में तुम्हारे ले जाने लायक कोई चीज नहीं है। इसलिए जब मैंने देखा कि तुम आ रहे हो, तो मैं बेहद झेंप गया और इस सन्दूक के अन्दर छिप गया।"

ताकतवर कौन?

बादशाह जानना चाहता था कि क्या उसके मुल्क में कोई ऐसा आदमी भी है जो उससे ज्यादा ताकतवर है। उसने आफन्ती को बुलाया और पूछा:

"नसरूद्दीन आफन्ती, तुम मेरे मुल्क के सभी नगरों और गांवों में घूम चुके हो। बताओ, क्या मेरे मुल्क में कोई आदमी ऐसा भी है जो मुझसे ज्यादा ताकतवर हो?"

"बेशक ऐसे लोग लाखों की तादाद में हैं, जहांपनाह!" आफन्ती ने झट जवाब दिया।

यह सुनकर बादशाह को बड़ा अचम्भा हुआ। उसने

पूछा:

"वे लोग कौन हैं?"

"किसान।"

"कैसी बेहूदा बात कर रहे हो! मैंने तो समझा था कि तुम किसी बड़े आदमी का जिक्र कर रहे हो। हल चलाने वाले किसानों की भला क्या बिसात! आखिर वे मुझसे ज्यादा ताकतवर कैसे हो सकते हैं?"

"हां जहांपनाह, किसान आपसे कहीं ज्यादा ताकतवर हैं!" आफन्ती ने उत्तर दिया। "अगर वे आपके लिए अनाज न उगाएं, तो भला आपके अन्दर ताकत कहां से आ सकती है?"

आंख की दवा से पेट का इलाज

एक दिन एक मरीज कराहता हुआ आफन्ती के घर आ पहुंचा। दरवाजे के अन्दर घुसते ही वह जोर से चिल्लाया:

"हाय, मर गया! पेट में जोर से दर्द हो रहा है! जल्दी से कोई दवा दे दीजिए!"

"तुम्हें क्या हो गया है? तुमने कोई गन्दी चीज तो नहीं खाई?" आफन्ती ने पूछा।

"नहीं, ऐसी कोई बात नहीं। मैंने सिर्फ एक रोटी खाई है, जिस पर फफूंदी लगी हुई थी।"

यह सुनकर आफन्ती ने बिना कुछ कहे अपना दवाइयों का

सन्दूक खोला और उसमें से आंख की दवा निकाल ली।

"सिर ऊपर उठाओ और आंखें खोलो। मैं तुम्हारी आंखों में दवा डालना चाहता हूं," आफन्ती ने मरीज से कहा।

"आफन्ती साहब, आप गलत समझ रहे हैं। मुझे पेट की बीमारी है, आंखों की नहीं!" मरीज चिल्लाया।

"मैं ठीक समझ रहा हूं," आफन्ती बोला। "अगर तुम्हारी आंखें ठीक होतीं, तो इतनी बड़ी उम्र में फफूंदी वाली रोटी न खाते!"

बादशाह का राशिचिन्ह*

एक बार बादशाह ने मांग की कि आफन्ती उसका राशिचिन्ह बताए। आफन्ती हिसाब लगाकर बोला:

"जहांपनाह, आपका राशिचिन्ह कुत्ता है।"

बादशाह ने बौखलाकर कहा:

"मैं बादशाह हूं। मेरा राशिचिन्ह कम से कम भेड़िया तो जरूर होना चाहिए। तुम कुत्ता कैसे बता रहे हो?"

आफन्ती ने उत्तर दिया:

---

* *चीन में पुरानी मान्यताओं के अनुसार हर वर्ष का प्रतीकचिन्ह इन बारह जन्तुओं में से किसी एक को माना जाता है: चूहा, बैल, गाय, खरगोश, नागराज, सांप, भेड़, घोड़ा, बन्दर, मुर्गा, कुत्ता, और सुअर। जो व्यक्ति जिस वर्ष जन्म लेता है उस वर्ष का प्रतीकचिन्ह उस व्यक्ति का राशिचिन्ह भी बन जाता है।*

"जहांपनाह, अगर आप चाहते हैं कि मैं आपके तलवे चाटूं, तो मैं आपका राशिचिन्ह हाथी भी बता सकता हूं!"

साफे का दम

एक बार आफन्ती अपने सिर पर एक मोटा-सा साफा पहनकर सड़क पर जा रहा था। साफा आम तौर पर सिर्फ पढ़ेलिखे लोग ही पहनते थे। उसे देखकर एक आदमी नम्रता से बोला:

"जनाब आलिम-फाजिल साहब, मेहरबानी करके मेरा यह खत तो पढ़ दीजिए।"

"माफ करो भाई। मेरे लिए काला अक्षर भैंस बराबर है," आफन्ती बोला।

"तकल्लुफ क्यों कर रहे हैं जनाब?" जब आप इतना बड़ा साफा पहने हुए हैं, तो यह कैसे मुमकिन है कि आप पढ़ना-लिखना न जानते हों?"

यह सुनकर आफन्ती हंस पड़ा। उसने साफा उतारकर उस आदमी के सिर पर पहना दिया और बोला:

"बहुत अच्छा, अगर मेरे साफे में इतना दम है कि इसे पहनकर विद्या अपने आप आ जाएगी, तो लो यह साफा तुम पहन लो और अपना खत खुद पढ़ लो!"

अन्धा अफसर

आफन्ती का एक दोस्त था। बचपन में दोनों लंगोटिए यार थे। बाद में वह दोस्त राजधानी में एक बड़ा अफसर बन गया। यह जानकर आफन्ती बड़ा खुश हुआ और उससे मिलने अपने दूर-दराज गांव से राजधानी जा पहुंचा।

पर दोस्त को डर था कि एक गरीब किसान का दोस्त कहलाने से कहीं उसकी इज्जत धूल में न मिल जाए। इसलिए उसने आफन्ती से एक अजनबी का सा सलूक करते हुए पूछा:

"तुम्हारा नाम क्या है?मुझसे क्यों मिलने आए हो?"

यह सुनकर आफन्ती को बड़ा गुस्सा आया। उसने तुरन्त उत्तर दिया:

"मैं नसरूद्दीन आफन्ती हूं। तुम्हारा बचपन का पक्का दोस्त। मैंने सुना है, तुम्हारी आंखें खराब हो चुकी हैं इसलिए तुम्हारी देखभाल करने आया हूं। कौन जानता था कि तुम अफसर बनने के बाद अन्धे हो जाओगे!"

सबसे बड़ा भुक्कड़

एक सेठ आफन्ती की खिल्ली उड़ाना चाहता था। उसने बहुत से तरबूज खरीद लिये और आफन्ती व दूसरे दोस्तों को तरबूज खाने का न्यौता दिया। वह एक तरफ तो लोगों से बार-बार तरबूज खाने का अनुरोध करता जा रहा था, लेकिन दूसरी तरफ अपने

खाए तरबूजों के छिलके चुपके से आफन्ती के सामने रखता जा रहा था। जब सब तरबूज खत्म हो गए, तो सेठ ताज्जुब का दिखावा करता हुआ चिल्लाया:

"दोस्तो, जरा देखो तो! आफन्ती के सामने छिलकों का कितना बड़ा ढेर लग गया है! हममें सबसे ज्यादा तरबूज इसी ने खाए हैं।

"हा-हा-हा!" सब लोग ठहाका मारकर हंस पड़े।

"दोस्तो, तुम लोग मुझ पर व्यर्थ ही हंस रहे हो। तुम नहीं जानते कि सबसे बड़ा भुक्कड़ कौन है?" आफन्ती हंसता हुआ बोला, "जब मैं तरबूज खाता हूं, तो छिलके जरूर फेंक देता हूं। पर सेठ जी तो तरबूज के छिलके भी निगल गए हैं। उनके सामने एक भी छिलका मौजूद नहीं है!"



दो गधों का बोझ

एक बार बादशाह और प्रधान मंत्री आफन्ती को साथ लेकर जंगल में शिकार खेलने गए। सूरज अंगारे बरसा रहा था। गर्मी के मारे बादशाह और प्रधान मंत्री दोनों ने अपने कपड़े उतारकर आफन्ती के कन्धे पर लाद दिए। आफन्ती पसीने से तरबतर हो गया। ऊपर से बादशाह ने आफन्ती की हंसी उड़ाते हुए चुटकी ली:

"ओह! आफन्ती, तुम्हारे कन्धों पर कम से कम एक गधे का बोझ जरूर है!"

"एक नहीं दो गधों का बोझ है, जहांपनाह!" आफन्ती ने तुरन्त जवाब दिया।

आफन्ती की तीरन्दाजी

एक आदमी बादशाह के सामने आफन्ती की तीरन्दाजी की तारीफों के पुल बांधने लगा। यह सुनकर बादशाह ने आफन्ती को अपने साथ शिकार खेलने का निमंत्रण दिया। रास्ते में दूर से एक पेड़ दिखाई दिया। बादशाह ने आफन्ती से पेड़ को निशाना बनाकर तीर चलाने को कहा। आफन्ती ने तीर चलाया, पर वह निशाना चूक गया। बादशाह खिलखिलाकर हंस पड़ा।

"इसमें हंसने की क्या बात है, जहांपनाह?" आफन्ती बोला। "यह तो मैं आपकी तीरन्दाजी की नकल कर रहा था!" यह

कहकर उसने फिर एक तीर चलाया। पर वह भी निशाना चूक गया। बादशाह फिर एक बार जोर से हंस पड़ा।

"इसमें हंसने की क्या बात है, जहांपनाह!" आफन्ती बोला। "यह तो मैं आपके मंत्रियों की तीरन्दाजी की नकल कर रहा था!" इसके बाद उसने तीसरा तीर चलाया और वह निशाने पर बैठ गया।

"देखा जहांपनाह?" तीर के लक्ष्य पर लगते ही आफन्ती ने बादशाह को झुककर सलाम किया और बोला: "यह मेरी यानी नसरूद्दीन आफन्ती की तीरन्दाजी है!"

हजार बार कोसना

आफन्ती सड़क पर जा रहा था। अचानक एक पत्थर से ठोकर लगी और वह मुंह के बल गिर पड़ा। आफन्ती चिढ़कर पत्थर से बोला:

"उल्लू के पट्ठे, मैं तुझे हजार बार कोसता हूं!"

संयोग से एक शरीफजादा वहां से गुजर रहा था। उसने सोचा आफन्ती उसी को कोस रहा है। उसने काजी के पास जाकर आफन्ती के खिलाफ शिकायत दर्ज करा दी।

काजी ने शरीफजादे की शिकायत सुनी और बिना आफन्ती का पक्ष सुने ही उस पर चांदी के आधे सिक्के का जुर्माना कर दिया।

आफन्ती ने अपनी जेब से चांदी का एक सिक्का निकालकर

मेज पर फेंक दिया और काजी से बोला:

"हजार बार कोसने का जुर्माना अगर सिर्फ आधा चांदी का सिक्का है तो मैं पूरा सिक्का देता हूं। बकाया रकम मुझे लौटाने की जरूरत नहीं है। उसके बदले मैं हजार बार तुम्हें भी कोसता हूं!"

उबले अण्डे और चूजे

शहर का एक सेठ एक रेस्तरां चलाता था। एक बार आफन्ती ने उसके रेस्तरां में तीन उबले अण्डे खाए। जब अण्डे खा चुका तो पता चला कि वह पैसे लाना भूल गया है। उसने सेठ से माफी मांगी और उसे यकीन दिलाया कि अगली बार शहर आने पर उसके पैसे जरूर चुका देगा।



"बेफिक्र रहो, आफन्ती," सेठ ने कहा, "तीन अण्डों की कीमत ज्यादा नहीं है। जब फुर्सत मिले, दे जाना।"

छह महीने बाद आफन्ती फिर शहर गया और सेठ के पैसे चुकाने रेस्तरां में जा पहुंचा। उसने सेठ से पूछा:

"सेठ जी, पिछली बार मैंने आपके यहां तीन अण्डे खाए थे। आपको कितने पैसे दे दूं?"

सेठ ने दीवार पर से एक बड़ा-सा गिनती-चौखट उतारा और देर तक हिसाब लगाने के बाद बोला:

"ज्यादा नहीं हैं। तीन अण्डों के लिए सिर्फ तीन सौ य्वान* काफी हैं।"

"क्या कहा? सेठ जी, आप बौरा तो नहीं गए हैं?" आफन्ती भौचक्का रह गया।

"क्यों, क्या तुम इसे बहुत ज्यादा समझ रहे हो?" सेठ ने कहा, "अगर ये तीन अण्डे तुमने न खाए होते, तो इनसे तीन मुर्गियां पैदा होतीं। छः महीने के अन्दर एक मुर्गी कम से कम एक सौ अण्डे देती और तीन मुर्गियां तीन सौ अण्डे देतीं। अगर इन तीन सौ अण्डों से भी चूजे निकल आते, तो तुम्हीं बताओ उनका मूल्य कितना हो जाता?"

आफन्ती ने सेठ का यह कुतर्क मानने से इनकार कर दिया। सेठ इंसाफ कराने बादशाह के पास जा पहुंचा।

---

* *चीन की मुद्रा।*

मुकदमे की सुनवाई के दिन बादशाह सुबह से ही आफन्ती को कड़ी से कड़ी सजा सुनाने को तैयार था। पर दो पहर तक आफन्ती की छाया तक नजर नहीं आई। बादशाह ने बार-बार आदमी भेजा, तो आफन्ती एक करछी उठाए आहिस्ता-आहिस्ता आ पहुंचा।

"आफन्ती, तुम दिन-ब-दिन ढीठ बनते जा रहे हो," बादशाह गरजकर बोला। "जुर्म करने के बाद भी कानून की गिरफ्त से बचने की कोशिश कर रहे हो!"

"नहीं जहांपनाह, ऐसी बात नहीं है। मैं दरअसल काम में बेहद मशगूल था। मैं अपने पड़ोसी के साथ मिलकर दो मू जमीन पर गेहूं उगाता हूं। कल गेहूं की बुवाई है। बोने से पहले हम लोग गेहूं के बीज भून रहे थे। इसलिए मुझे यहां पहुंचने में कुछ देर हो गई।"

"हा-हा-हा!" बादशाह और सेठ दोनों जोर से हंस पड़े। बादशाह बोला: "तुमसे बड़ा बेवकूफ इस दुनिया में कौन हो सकता है! भला भुने हुए बीजों से भी कहीं अंकुर निकल सकते हैं?"

"अगर भुने हुए बीजों से अंकुर नहीं निकल सकते, तो मैं आपसे पूछना चाहता हूं, जहांपनाह, क्या उबले अण्डों से चूजे निकल सकते हैं?"

आफन्ती की दलील सुनकर बादशाह और सेठ का मुंह खुला का खुला रह गया।

एकमात्र इलाज

आफन्ती गांव-गांव में घूमकर लोगों की बीमारियों का इलाज करता था। किसी गांव के एक सेठ ने जानबूझकर उसे परेशान करना चाहा। वह हड़बड़ाकर आफन्ती के पास पहुंचा और बोला:

"आफन्ती, कल रात जब मैं गहरी नींद में सो रहा था तो अचानक एक चूहा मेरे मुंह के रास्ते पेट में चला गया। इसका क्या इलाज है?"

"तुम भी कैसे बेवकूफ हो, सेठ जी!" आफन्ती ने जवाब दिया। "इसका इलाज तो बड़ा आसान है। जाओ, जल्दी से एक जिन्दा बिलली निगल लो! वह जरूर तुम्हारे पेट के चूहे को खा जाएगी। मेरे पास तुम्हारी बीमारी का दूसरा कोई इलाज नहीं।"

बटुए की हिफाजत

एक बार आफन्ती यात्रा कर रहा था। रात में वह एक सराय में ठहरा। इस डर से कि कहीं कोई उसके पैसे न चुरा ले, उसने सोने से पहले अपना बटुआ सिरहाने के नीचे रख लिया।

आफन्ती के पास ढेर सारे पैसों से भरा बटुआ देखकर सराय-मालिक के मुंह में पानी आ गया और उसने उसे चुराने की योजना बना ली। रात को वह अनेक बार दबे पांव आफन्ती के पलंग के पास गया। पर इस डर से कि कहीं आफन्ती जागा न हो, उसने हाथ बढ़ाने का साहस नहीं किया। जब आधी रात बीत गई,

तो उससे न रहा गया और उसने धीमे स्वर में आफन्ती से पूछा:

"आफन्ती भाई, क्या तुम सो चुके हो?"

"नहीं, क्या तुम्हें मुझसे कोई काम है?"

"आधी रात बीत चुकी है, जल्दी सो जाओ।"

"क्यों?"

"कल तुम्हें लम्बा सफर करना है। अगर अच्छी तरह आराम न किया, तो आगे कैसे जाओगे?जहां तक तुम्हारे बटुए का सवाल है, 'उसकी फिक्र न करो। हमारी सराय में उसे कोई नहीं चुराएगा।"

"शुक्रिया! अब मैं गहरी नींद सो सकूंगा।" यह कहकर आफन्ती खर्राटे मारने लगा और बीच-बीच में बड़बड़ाता रहा: "मैं सो चुका हूं...मैं सो चुका हूं...सराय-मालिक का कहना है कि उसकी सराय में मेरा बटुआ कोई नहीं चुराएगा!"

शोरबे के शोरबे का शोरबा

आफन्ती शिकार खेलने गया तो उसे एक जंगली बकरी मिली। वह उसे मारकर घर ले गया। पत्नी ने बकरी का मांस एक देगची में पकाया। आफन्ती ने अपने कुछ जिगरी दोस्तों को दावत दी और सबने मिलकर जंगली बकरी का मांस खाया।

दूसरे दिन कुछ आवारा नौजवान आफन्ती के घर आ पहुंचे और बोले:



"आफन्ती भाई, हम तुम्हारे दोस्त के दोस्त हैं। सुना है तुम एक जंगली बकरी मारकर लाए हो। हमें नहीं खिलाओगे?"

"बहुत अच्छा, आओ बैठो!" आफन्ती ने बकरी की बचीखुची हड्डियों को देगची में डालकर उबाल लिया और हरेक को एक-एक कटोरा शोरबा थमाकर बोला: "लो पियो, यह गरमागरम शोरबा पियो।"

"यह किस चीज का शोरबा है, आफन्ती?" उन्होंने पूछा।

"तुम लोग मेरे दोस्त के दोस्त हो, इसलिए मैं तुम्हें बकरी के मांस के शोरबे का शोरबा पिला रहा हूं!" आफन्ती ने उत्तर दिया।

आवारा नौजवानों को एक-एक कटोरा शोरबा पीकर अपनी राह लेनी पड़ी।

तीसरे दिन, दूर से कुछ घुड़सवार अजनबी आफन्ती के पास आए और अपना परिचय स्वयं कराते हुए बोले:

"आफन्ती, हम सब तुम्हारे दोस्त के दोस्त के दोस्त हैं। सुना है तुमने एक मोटी-ताजी जंगली बकरी का शिकार किया है। उम्मीद है हमारी खातिर करने में कंजूसी नहीं करोगे।"

आफन्ती ने उन सबको अपने कमरे में बिठा दिया। फिर एक बड़े से तसले में गन्दा पानी भरकर उनके सामने रख दिया। हरेक के कटोरे में एक-एक करछी गन्दा पानी डालकर वह बोला:

"तुम लोग मेरे माननीय मेहमान हो, मेरे दोस्त के दोस्त के दोस्त हो। इसलिए मैं तुम्हें बकरी के मांस के शोरबे के शोरबे का शोरबा पिला रहा हूं!"

दस्तखत

एक बार एक सेठ आफन्ती से मिलने गया। पर आफन्ती के दरवाजे पर ताला लगा था। सेठ ने इसे अपनी बेइज्जती समझा। अपना गुस्सा उतारने के लिए उसने दरवाजे पर टेढ़े-मेढ़े अक्षरों में "गधा" लिख दिया।

दूसरे दिन बाजार में उसकी भेंट आफन्ती से हो गई। आफन्ती तपाक से बोला:

"सेठ जी, आपसे माफी चाहता हूं। कल जब आप मुझसे मिलने आए, संयोग से उस समय मैं घर पर नहीं था।"

सेठ हैरान हो गया। उसने आफन्ती से पूछा: "लेकिन तुम्हें यह कैसे मालूम हुआ कि मैं तुमसे मिलने आया था?"

"हा-हा-हा!" आफन्ती ठहाका मारकर हंस पड़ा। "इसमें ताज्जुब की क्या बात है? क्या आप मेरे दरवाजे पर दस्तखत नहीं कर गए थे?"

आंखों की भूख

गांव में एक बूढ़े सेठ को मरे कई दिन हो चुके थे। मगर उसकी दोनों आंखें खुली थीं। इमाम ने उसके लिए कुरान शरीफ की आयतें पढ़ीं और बार-बार फातिहा कही। फिर भी मृतक की आंखें बन्द नहीं हुईं। लाचार होकर उसके घरवालों को आफन्ती को बुलाना पड़ा।

"इनके लिए फातिहा कहना बेकार है। यह समस्या मुझे अपने तरीके से हल करनी होगी!" आफन्ती ने बड़े आत्मविश्वास के साथ कहा। "फौरन एक प्लेट पुलाव लाओ और इन्हें खिला दो। इनकी आंखें जरूर बन्द हो जाएंगी!"

"तुम पागल हो गए हो क्या, आफन्ती?" इमाम बौखलाकर बोला। उसकी भौंहें तन गईं और दाढ़ी कांपने लगी। वह जोर से चिल्लाया, "जब आदमी की जान ही न रहे, तो वह खाना कैसे खा सकता है?"

"आफन्ती, हम लोग दुख के सागर में डूबे हुए हैं और तुम्हें मजाक सूझ रहा है!" सेठ की पत्नी ने शिकायत के स्वर में कहा। "सेठ जी को ज्यादा पुलाव खाने की वजह से ही तो प्राण त्यागने पड़े हैं!"

"तब तो मेरी बात बिल्कुल ठीक है!" आफन्ती भौंहें सिकोड़ कर बोला। "कहावत है, लालची आदमी के पेट की भूख बुझ सकती है, पर आंखों की भूख कभी नहीं बुझती। सेठ जी की आंखें अब भी खुली हैं। क्या इससे यह जाहिर नहीं होता कि उनकी आंखों की भूख नहीं बुझी?"

कुछ नहीं आता!

एक बार आफन्ती और उसका दोस्त किसी बगीचे में पुलाव पका रहे थे। दोस्त ने कहा:

"आफन्ती, मुझे न तो आग जलाना न गाजर काटना आता है और न आग पर देगची रखना। मुझे दरअसल कुछ नहीं आता।" यह कहकर वह एक पेड़ की छाया में चादर तानकर सो गया।

आफन्ती ने गाजर काटी, आग जलाई और उस पर देगची रख दी। फिर उसने केवल आधे चावल देगची में डाले और बाकी आधे चावल कहीं छिपा दिए। पुलाव काफी देर तक पकता रहा। तैयार होने पर सारा पुलाव उसने खुद ही खा लिया। जब आफन्ती बर्तन साफ कर रहा था, तो दोस्त आंखें मलता हुआ उसके पास आ पहुंचा और झुंझलाकर बोला:

"अरे आफन्ती, तुमने पूरा पुलाव अकेले ही कैसे खा लिया? मुझे क्यों नहीं जगाया?"

"मेरे प्यारे दोस्त," आफन्ती ने बड़े इत्मीनान से उत्तर दिया, "क्या तुमने यह नहीं कहा था कि तुम्हें कुछ नहीं आता? मैंने

सोचा, तुम्हें पुलाव खाना भी नहीं आता होगा। इसलिए नहीं जगाया!"

सूझबूझ वाला सेवक

बादशाह को पता चला कि आफन्ती एक होशियार, फुर्तीला और सूझबूझ वाला आदमी है। इसलिए उसे राजमहल में सेवक नियुक्त कर दिया। बादशाह ने उससे कहा:

"आफन्ती, जब कभी तुम्हें कोई काम दिया जाए, तो उससे सम्बन्धित बाकी सब काम तुम्हें एक साथ पूरे कर लेने चाहिए।"

शुरू-शुरू में आफन्ती ने बहुत से काम बखूबी पूरे किए। बादशाह बड़ा खुश हुआ। उसने मंत्रियों के सामने आफन्ती की तारीफ के पुल बांध दिए और उनसे कहा कि वे आफन्ती की मिसाल पर चलें।

एक दिन यकायक बादशाह गम्भीर रूप से बीमार हो गया। वह न तो खाना खा सकता था और न एक भी बूंद पानी पी सकता था। मंत्रियों ने आफन्ती को बुलाया। बादशाह कराहता हुआ बोला:

"आफन्ती, जाओ, जल्दी से किसी अच्छे हकीम को बुला लाओ। जरा भी देर न करना।"

"आप बिल्कुल बेफिक्र रहें, जहांपनाह!" आफन्ती बोला, "मैं इससे सम्बन्धित सभी काम एक साथ पूरे करके जल्दी ही लौट आऊंगा।"

आफन्ती ने राजधानी में जगह-जगह पूछताछ करने के बाद

बादशाह का इलाज करने के लिए एक हकीम चुन लिया। फिर मस्जिद में जाकर कुरान शरीफ पढ़ने के लिए एक मौलवी बुला लाया। साथ ही एक ताबूत भी ले आया और उसे उठाने के लिए चार आदमी भी बुला लाया। सूरज डूबने तक वह बादशाह के पास लौट गया।

"हरामजादे!" ताबूत देखते ही बादशाह आपे से बाहर हो गया और थरथर कांपता हुआ बोला, "मैं अभी मरा कहां हूं? तू यह ताबूत क्यों लाया है? इस मौलवी को यहां से दफा कर और ताबूत बाहर फेंक दे!"

"जहांपनाह, गुस्सा न कीजिए, शान्त रहिए!" आफन्ती बड़े अदब के साथ झुककर बोला। "आप उल्टी सांस लेने लगे हैं। मुझे इससे सम्बन्धित एक और जरूरी काम जल्दी ही पूरा करना है–आपके लिए एक कब्र खुदवानी है!"

आफन्ती की बात सुनते ही बादशाह निरुत्तर हो गया। उसकी आंखों के सामने अंधेरा छा गया। थोड़ी देर खांसने–खखारने के बाद वह पलंग पर लुढ़क गया।

बंटवारा

एक बार काजी एक पका-पकाया कलहंस बादशाह को भेंट करने आया। उसने कहा:

"बादशाह सलामत, आज आपका जन्मदिन है। मैं जानता हूं कि आपको कलहंस का मांस सबसे ज्यादा पसन्द है। इसलिए यह



कलहंस खुद पकाकर आपको और आपके परिवार के लोगों को खिलाने लाया हूं।"

बादशाह की दो शहजादियां कलहंस की टांगें और उसके दो शहजादे कलहंस का सीना खाने के लिए मचलने लगे। बादशाह और बेगम को कोई उपाय नहीं सूझा तो उन्होंने राजमहल के सेवक आफन्ती को बुलाया और कलहंस का बंटवारा करने को कहा।

आफन्ती ने चाकू से कलहंस का सिर काटकर बड़े अदब के साथ बादशाह को देते हुए कहा:

"जहांपनाह, आप हमारे मुल्क के सरताज हैं। आपको सिर खाना चाहिए। मेरी दिली ख्वाहिश है कि आप हमेशा हमारे मुल्क के सरताज बने रहें।"

इसके बाद उसने कलहंस की गर्दन काटकर बेगम को पेश की और बोला:

"कहावत है, अगर शौहर की उपमा सिर से दी जाए, तो बेगम की उपमा गर्दन से दी जानी चाहिए। इसलिए आपको यह गर्दन दे रहा हूं। मेरी दिली ख्वाहिश है कि आप बादशाह सलामत से कभी न बिछुड़ें।"

फिर उसने कलहंस का एक-एक डैना दोनों शहजादियों को दे दिया और कहा:

"मेरी दिली ख्वाहिश है कि तुम्हारी शादी किसी अच्छी जगह हो जाए। यह डैना खाकर तुम अपने-अपने शौहरों के साथ दूर तक जा सकोगी।"

फिर उसने दोनों शहजादों को कलहंस का एक-एक पंजा दे दिया और कहा:

"तुम लोग बादशाह के ताजोतख्त के वारिस हो। पंजा खाकर तुम गद्दी पर मजबूती से पांव जमा सकोगे।"

अन्त में उसने मुस्कराते हुए अपनी बात जारी रखी:

"अब कलहंस के सीने और टांगों का गोश्त ही बाकी रह गया है। अगर उसे आप लोग खाएंगे, तो अपशकुन होगा। बेहतर यह होगा कि उसे मैं यानी नसरूद्दीन आफन्ती खाऊं!" यह कहता हुआ वह कलहंस के सीने और टांगों का गोश्त उठाकर राजमहल से बाहर चला गया और ड्योढ़ी में बैठकर मौज से खाने लगा।

पहलवान की ताकत

एक बार एक तथाकथित पहलवान आफन्ती के घर गया और बोला:

"आफन्ती, तुम अक्ल में बड़े हो और मैं ताकत में। अगर हम दोनों दोस्त बन जाएं, तो कैसा रहेगा?"

आफन्ती ने आगन्तुक को गौर से देखा और उससे पूछा:

"पर यह तो बताओ, तुम्हारे अन्दर कितनी ताकत है?"

"मैं 500 किलोग्राम वजन वाली चट्टान को सिर्फ एक हाथ से आसानी से उठा सकता हूं और उसे नगर की चारदीवारी के बाहर फेंक सकता हूं," पहलवान डींग मारता हुआ बोला।

"ज्यादा शेखी न बघारो," आफन्ती ने उसकी ओर घूरते हुए कहा। "पहले मैं तुम्हारी परीक्षा लेता हूं।" यह कहकर वह पहलवान को आंगन में ले गया।

"ठीक है," पहलवान अकड़कर बोला, "मैं हर परीक्षा में खरा उतरूंगा।"

"अरे यार, ज्यादा डींग न मारो। जरा विनम्र रहो!" यह कहते हुए आफन्ती ने अपनी जेब से एक रेशमी रूमाल निकाला और उसके हाथ में थमाते हुए कहा, "इसका वजन दस ग्राम से भी कम है। जरा इसे आंगन की दीवार के बाहर फेंक कर तो दिखाओ!"

"यह भी कोई बड़ी बात है?" पहलवान मुस्कराता हुआ बोला, "आफन्ती, क्या तुम मुझे इतना नाचीज समझते हो? यह तो मेरे बाएं हाथ का खेल है! लो, यह देखो!" पहलवान ने रूमाल

उठाकर जोर से फेंका। मगर वह आंगन के अन्दर ही गिर गया।

आफन्ती ठहाका मारकर हंस पड़ा और बोला:

"अब जरा मेरी ताकत भी देखो। मैं इस रूमाल के साथ एक पत्थर भी आंगन की दीवार के बाहर फेंक सकता हूं।"

उसने जमीन से एक गोलाकार पत्थर उठा लिया और उसे रूमाल में लपेटकर दीवार के बाहर फेंक दिया।

"अब बोलो, कौन ज्यादा ताकतवर है? तुम या मैं?" आफन्ती ने चुटकी ली।

पहलवान पानी-पानी हो गया और बिना कुछ कहे अपना सा मुंह लेकर चला गया।

दुरंगा अमल

काजी ने एक दिन आफन्ती से पूछा:

"आफन्ती, लोग सामने तो मेरी खूब तारीफ करते हैं, लेकिन पीठ पीछे मुझे गालियां देते हैं। बता सकते हो, इसकी क्या वजह है?"

"काजी साहब," आफन्ती ने उत्तर दिया, "क्या यह मामूली-सी बात भी आपकी समझ में नहीं आ रही?"

"नहीं।"

"अच्छा तो सुनिए, मैं आपको बताता हूं," आफन्ती व्यंग्यभरे स्वर में बोला। "आप कहते कुछ हैं और करते कुछ हैं। आपका अमल दुरंगा है। इसलिए लोग भी आपसे दुरंगा बर्ताव करते हैं।"

दुआ बनाम बददुआ

उन दिनों आफन्ती एक मोची का काम करता था। एक मौलवी उसके पास आया और बोला:

"आफन्ती भाई, मेरे जूते का तल्ला उखड़ गया है। जरा इसकी मरम्मत तो कर दो। मैं खुदा से तुम्हारे लिए दुआ मांगूंगा।"

"माफ कीजिए, मौलवी साहब, मेरे पास फुरसत नहीं है!" आफन्ती सिर उठाए बिना काम जारी रखता हुआ बोला। "आप अपना जूता किसी दूसरे मोची से ठीक क्यों नहीं करवा लेते।"

"यह कैसे हो सकता है?" मौलवी ने कड़ी आवाज में कहा। "मेरा काम तुम्हें अभी करना होगा। वरना मैं खुदा से तुम्हारे लिए बददुआ मांगूंगा। तब तुम्हें पछताना पड़ेगा।"

"वाह!" आफन्ती हाथ का काम रोककर बोला, "अगर आपकी दुआ वाकई इतनी कारगर है, तो आपने खुदा से यह दुआ क्यों नहीं मांगी कि आपका जूता कभी न टूटे?"

मूर्ख बादशाह

नया बादशाह निरा मूर्ख और अनाड़ी था। विदेशी राजदूतों के साथ भेंट के समय भी ऊलजलूल बातें कर बैठता था। सुनकर लोग अक्सर ठहाके मारने लगते थे। इससे देश की साख धूल में मिलती जा रही थी।

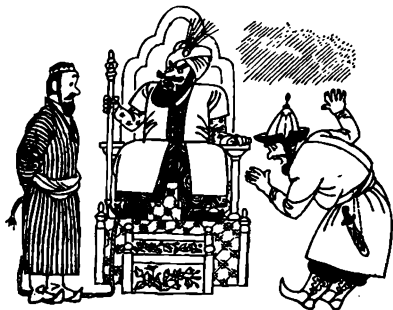
मंत्रियों की सिफारिश पर बादशाह ने अक्लमंद आफन्ती को

अपना सलाहकार बना लिया। आफन्ती ने सलाह दी:

"जहांपनाह, जब कोई विदेशी राजदूत आपसे मुलाकात करने आएगा, तो मैं आपके पांव से एक डोरी बांध दूंगा, अगर आपकी बातें ठीक होंगी, तो मैं चुपचाप खड़ा रहूंगा। अगर आपकी बातें गधे के होंठों और घोड़े के जबड़ों की तरह बेमेल होंगी, तो मैं फौरन डोरी खींच दूंगा। इशारा पाते ही आप फौरन रूक जाएं।"

बादशाह को उसकी सलाह जंच गई। वह आफन्ती की सराहना करता हुआ बोला:

"तुम्हारा सुझाव वाकई बहुत बढ़िया है!"



दूसरे दिन पड़ोसी देश का एक राजदूत बादशाह से मुलाकात करने आया। बादशाह ने उससे पूछा:

"आपके देश में कुत्ते-बिल्लियों का क्या हाल है? भेड़-बकरियों की सेहत कैसी है?..."

बादशाह की ऊलजलूल बात सुनकर आफन्ती ने फौरन डोरी खींच दी और राजदूत को सम्बोधित करता हुआ बड़े अदब से बोला:

"जनाब हमारे बादशाह बहुत बड़े आलिम-फाजिल हैं। उनकी हर बात का मतलब बड़ा गहरा होता है और उसे आम आदमी आसानी से नहीं समझ सकता। 'कुत्ते-बिल्लियों' से उनका तात्पर्य आपके देश के अफसरों व सेनापतियों से है, और 'भेड़-बकरियों' से उनका अभिप्राय आपके देश की आम जनता से है।"

यह सुनते ही राजदूत खड़ा हो गया और बड़े अदब के साथ बादशाह के सामने झुककर बोला:

"बादशाह सलामत, आपकी दानिशमन्दी सचमुच काबिले तारीफ है!"

राजदूत की बात सुनते ही बादशाह आफन्ती की तरफ मुड़ा और उसे फटकारता हुआ बोला:

"अरे ओ उल्लू की औलाद! अगर मेरी बात का इतना गहरा मतलब था, तो तूने मेरे पांव में बंधी डोरी क्यों खींची?"

बादशाह का चेहरा

जब आफन्ती बादशाह का अंगरक्षक था, तो एक दिन बादशाह ने भौंहें सिकोड़कर उससे कहा:

"कल मैंने आईने में अपनी सूरत देखी तो पता चला कि मैं वाकई बेहद बदसूरत हूं। अब मैंने फैसला कर लिया है कि आयन्दा अपना चेहरा आईने में कभी नहीं देखूंगा!"

"जहांपनाह!" आफन्ती तुरन्त बोला, "आप अपनी सूरत सिर्फ एक बार देखकर ही उससे घृणा करने लगे हैं। लेकिन मुझे रोजाना कम से कम दस-बीस बार आपकी सूरत देखनी पड़ती है। आप सोच भी नहीं सकते कि मेरा क्या हाल होता है!"

उड़ने वाला घोड़ा

बादशाह ने आफन्ती से पूछा:

"आफन्ती, बहुत दिनों से मेरी इच्छा है कि आकाश में उड़कर पूरी दुनिया की सैर करूं। मैं दुनिया के पहाड़ों, नदियों, शहरों, गांवों, जंगलों और मैदानों को देखकर अपना ज्ञान बढ़ाना चाहता हूं। यह इच्छा पूरी करने के लिए कोई अच्छी तरकीब बता सकते हो?"

"जरूर बता सकता हूं, जहांपनाह!" आफन्ती बुलन्द आवाज में बोला।

यह सुनकर बादशाह की बांछें खिल गईं और वह बोला: "तुम सचमुच बड़े अकलमंद आदमी हो! बताओ, वह कौन-सी तरकीब है?"

"आकाश में पहुंचना कोई मुश्किल काम नहीं है जहांपनाह, बशर्ते आपके अन्दर धीरज हो," आफन्ती ने कहा। "आप अपना खजूरी रंग का घोड़ा मुझे दे दीजिए। मैं उस पर सवार होकर दूर के एक पहाड़ से एक खास बूटी ले आऊंगा, जिसे खाकर घोड़े की पीठ पर पंख निकल आएंगे। तब आप उस पर बैठकर अपनी इच्छा पूरी कर सकेंगे। पर आने-जाने में कोई एक साल लग जाएगा। क्या इन्तजार कर सकते हैं?"

"हां आफन्ती, एक साल तो दूर रहा, इसके लिए मैं तीन साल भी इन्तजार कर सकता हूं!"

बादशाह खुशी से फूला न समाया। उसने अपने अंगरक्षक को आदेश दिया कि उसका घोड़ा फौरन आफन्ती के हवाले कर दे और इनाम के तौर पर उसे बहुत सा सोना-चांदी भी दे दे।

आफन्ती घोड़े पर सवार हो गया। चाबुक मारते ही घोड़ा हवा से बातें करने लगा।

घर लौटने के बाद आफन्ती अपनी पत्नी से बोला: "जाओ, एक छुरा तो ले आओ। आज हमें खाने के लिए काफी गोश्त मिल गया है।"

पत्नी ने सारी बात सुनी, तो अपनी हंसी न रोक पाई। पर साथ ही उसे कुछ चिन्ता भी होने लगी। बोली: "तुम बिना वजह यह

आफत क्यों मोल ले रहे हो?"

"इस दुनिया में अगर हम आफत से डरते रहेंगे, तो भला हमें खाने को गोश्त कैसे मिल सकेगा?" आफन्ती ने पत्नी को समझाते हुए कहा और घोड़े को हलाल कर दिया।

करीब एक साल बाद आफन्ती राजमहल में जा पहुंचा। उसे देखते ही बादशाह ने मुस्कराकर पूछा:

"आफन्ती, तीन दिन बाद एक साल पूरा होने वाला है। क्या मेरे घोड़े की पीठ पर पंख निकल आए हैं?"

"हां जहांपनाह," आफन्ती ने मूंछों पर हाथ फेरते हुए जवाब दिया।

"तुमने सचमुच कमाल कर दिखाया है!" बादशाह खुशी से उछल पड़ा। "घोड़े को साथ क्यों नहीं लाए?"

"मैं उसे साथ ला रहा था," आफन्ती दुखी होने का स्वांग रचता हुआ बोला। "मगर वह रास्ते में ही पंख फड़फड़ाता हुआ आकाश में उड़ गया।"

यह सुनते ही बादशाह को भारी सदमा पहुंचा और वह बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़ा।

"खुदा हाफिज, बादशाह सलामत!" यह कहता हुआ आफन्ती तेजी के साथ राजमहल से बाहर चला गया।

जहर का कटोरा

उन दिनों आफन्ती एक काजी के घर नौकरी करता था। एक दिन एक सेठ ने काजी को एक कटोरा शहद भेंट किया। काजी ने अभी-अभी खाना खाया था और उसे किसी जरूरी काम से बाहर जाना था। उसने आफन्ती को बुलाकर हुक्म दिया:

"आफन्ती, मैं बाहर जा रहा हूं। इस कटोरे में जहर है, जिसे अभी-अभी सेठ जी दे गए हैं। इसे सम्भालकर रख देना।" यह कहने के बाद काजी घोड़े पर सवार हो गया और बाहर चला गया।



काजी के बाहर जाते ही आफन्ती ने एक नान निकाला और उसे शहद में डुबाकर बड़े इत्मीनान से खाने लगा। कुछ ही क्षणों में वह सारा शहद चट कर गया। इसके बाद उसने काजी के घर के सारे बर्तन-भांडे तोड़ डाले।

काजी घर लौटा, तो देखा शहद का कटोरा खाली पड़ा है। उसने पूछा: "कटोरे का जहर कहां है, आफन्ती?"

आफन्ती ने बड़ी नाटकीयता के साथ कांपती जबान में जवाब दिया:

"मालिक, मुझसे आज एक भारी गलती हो गई है। मेरी लापरवाही से आपके घर के सारे बर्तन-भांडे टूट गए हैं। मैंने सोचा, आप मुझे जरूर फटकार लगाएंगे और मुझसे मुआवजा मांगेंगे। मैं एक गरीब आदमी हूं। इतना मुआवजा देना मेरे बूते के बाहर है। इसलिए मैंने आत्महत्या करने के लिए सेठ जी का दिया सारा जहर पी लिया है और मरने का इन्तजार कर रहा हूं!"

पारिश्रमिक

एक सेठ के बैल ने एक दिन आफन्ती के बैल पर सींगों से हमला कर दिया और उसे जान से मार डाला। आफन्ती इन्साफ कराने सेठ को पकड़कर काजी के पास ले गया।

दोनों पक्षों को सुनने के बाद काजी ने फैसला सुनाया:

"आफन्ती, तुम्हें मुआवजे के तौर पर सेठ जी को दस य्वान देने होंगे।"

इस बेइंसाफी से मायूस होकर आफन्ती ने पूछा:

"पर काजी साहब, जरा यह तो बताइए कि मेरा ही बैल मरा और मुझे ही मुआवजा भी क्यों देना पड़ रहा है?"

"सेठ जी के बैल ने तुम्हारे बैल को जान से मारने के लिए काफी ताकत लगाई। दस य्वान उसका पारिश्रमिक है।"

काजी की बात अभी पूरी भी न हो पाई थी कि आफन्ती ने उसके मुंह पर जोर से एक थप्पड़ जड़ दिया और बोला:

"काजी साहब, आपके मुंह पर थप्पड़ मारने में मुझे भी काफी ताकत लगानी पड़ी है। पारिश्रमिक के दस य्वान आप मुझे न देकर सेठ जी को दे दीजिए!" यह कहकर आफन्ती मस्ती से झूमता हुआ बाहर चला गया।

बहिश्त या दोजख?

एक दिन काजी ने आफन्ती से पूछा:

"मरने के बाद तुम बहिश्त में जाना चाहते हो या दोजख में?"

जवाब देने के बदले आफन्ती ने उलटा सवाल पूछ लिया:

"काजी साहब, पहले आप फरमाइए, आप कहां जाना चाहते हैं?"

थोड़ी देर चुप रहने के बाद काजी ने जवाब दिया:

"मैं जिन्दगीभर दूसरों की भलाई करता रहा हूं और ईमानदारी

से खुदा के बताए रास्ते पर चलता रहा हूं। इसलिए मैं जरूर बहिश्त में जाऊंगा।"

यह सुनते ही आफन्ती फौरन बोल पड़ा:

"तब मैं दोजख में जाना चाहता हूं। जहां आप रहें, वहां मैं हरगिज नहीं रहना चाहता!"

खिड़की पर सिर

एक बार आफन्ती के एक कंजूस दोस्त ने भोजन के लिए उसे अपने घर बुलाने का पाखण्ड रचा। आफन्ती निश्चित समय पर उसके घर जा पहुंचा।



दोस्त अपने मकान की दूसरी मंजिल की खिड़की से झांक रहा था। आफन्ती को देखते ही वह पत्नी के कान में कुछ फुस-फुसाया। पत्नी फाटक पर जाकर बोली:

"क्या आप ही आफन्ती हैं? बच्चों के अब्बा को किसी जरूरी काम से बाहर जाना पड़ा है। आप किसी दूसरे दिन तशरीफ लाइए!"

"ठीक है, मैं जाता हूं!" आफन्ती बोला। "मगर एक बात उनसे जरूर कह देना। आइन्दा वे जब कभी बाहर जाएं, अपना सिर खिड़की पर न लटका जाएं!"

अनोखा नुस्खा

आफन्ती एक अच्छा हकीम भी था। एक बार चर्बी के बोझ से लदा एक सेठ उसके पास आया और खींसें निकालकर बोला:

"आफन्ती, मैं अपने मोटापे से बड़ा परेशान हूं। क्या तुम मेरी इस बीमारी का इलाज कर सकते हो?"

आफन्ती ने सेठ को ऊपर से नीचे तक बड़े गौर से देखा और नुस्खा लिखकर उसके हाथ में थमा दिया। नुस्खे में लिखा था: "आप पन्द्रह दिन के अन्दर मर जाएंगे।"

यह अनोखा नुस्खा पढ़कर सेठ के पैरों तले की जमीन खिसकने लगी। वह जैसे-तैसे घर पहुंचा और पलंग पर पड़ गया। घबराहट के मारे वह न तो एक कौर नान खा पाया और न एक घूंट

चाय पी सका। सिर्फ पन्द्रह दिन के अन्दर ही उसकी सारी चर्बी गायब हो गई और शरीर कंकालमात्र रह गया।

जब पन्द्रह दिन बीत गए, तो वह फिर एक बार आफन्ती के पास जा पहुंचा और झुंझलाकर बोला: "आफन्ती, तुमने मुझे धोखा क्यों दिया?तुमने तो कहा था कि मैं पन्द्रह दिन के अन्दर मर जाऊंगा। फिर भी मैं जिन्दा कैसे हूं?"

"ज्यादा चालाकी न दिखाइए, सेठ जी!" आफन्ती ने गम्भीरता से कहा। "मेरे इस नुस्खे की ही बदौलत तो आपको अपनी फालतू चर्बी से छुटकारा मिला है। लाइए, जल्दी से मेरी फीस!"

मेरा हाथ लीजिए

एक बार एक इमाम तालाब के किनारे हाथ-पांव धो रहा था। अचानक उसका पांव फिसल गया और वह तालाब में गिर पड़ा। किनारे पर खड़े कई लोगों ने उसे बचाने के लिए अपना हाथ बढ़ाया और उससे कहा: "इमाम साहब, अपना हाथ मुझे दीजिए, मैं आपको बाहर खींच लूंगा।"

लेकिन इमाम ने हाथ देने से इंकार कर दिया।

यह देखकर आफन्ती जोर से चिल्लाया: "भाइयो, इमाम साहब अपनी जिन्दगी में सिर्फ दूसरों से लेना जानते हैं, किसी को कुछ देना नहीं जानते!" फिर उसने इमाम की तरफ हाथ बढ़ाया और बोला: "इमाम साहब, मेरा हाथ लीजिए, मैं आपको बाहर

खींच लूंगा!"

यह सुनते ही इमाम आफन्ती का हाथ पकड़कर तालाब के किनारे आ गया।